पिया दरस बिना दीदार दरद दुख भारी

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश अक्टूबर, 1960 में प्रकाशित प्रवचन)

सबके लिये ख़ुला है यह आश्रम तुम्हारा
सावन आश्रम है हमारा, यह आश्रम हमारा।
मत भेद सब भुलाये मन्दिर है यह हमारा ॥
आओ कोई पन्थी आओ कोई भी धर्मी आओ।
देशी विदेशियों को सन्देश है हमारा ॥
सन्तों की ऊंची बाणी, पढ़ते 'जमाल' जिसमें।
सबके दिलों की सुनता यह कृपाल है हमारा ॥
मानव का धर्म क्या है, मिलती है राह जिसमें।
सबका भला है चाहे, सावन का लाल प्यारा ॥
धरती है सब प्रभु की सन्तान सब उसी की।
सब गले मिल के बैठो, हरि मन्दर तन तुम्हारा ॥
आओ सभी मिलेंगे बैठेंगे प्रार्थना में।
तुकडिया कहे अमर है मन्दिर है यह तुम्हारा ॥
मत भेद को भुलाये मन्दिर है यह तुम्हारा ॥

आपसे आज एक सवाल है। वह यह कि पहले इन्सान बना कि समाजें ? कहना पड़ेगा, कि इन्सान पहले बना है। समाजें पीछे बनी हैं। क्यों बनाई गई ? इसलिये कि मनुष्य जीवन जो है, यह सबसे बड़ा गिना गया है।

बादअज़ ख़ुदा तोई किस्सा मुख्तसर।

परमात्मा के बाद दूसरा दर्जा इन्सान का है। समझे ! देवी देवता भी मनुष्य जन्म पाने के लिये लोच रहे हैं। इसमें फज़ीलत (बड़ाई) क्या है ? अगर इसको यह जान ले, तो यह God-in-man है, इसमें वह परमात्मा पूरे तौर से इज़हार कर रहा है। अगर इसकी रूचि कहो, बाहर से हटे यह देखेगा कि वह मुझमें है, और मैं उसमें हूं। वह महान सुरत है। मैं उस ज़ाते हक (प्रभु) की बून्द हूं, मैं भी सुरत हूं। वह All-Consciousness (महाचेतन) का समुन्दर है। मैं भी Conscious Entity हूं। समझे ! उसमें बड़ा भारी बल है, कि सारी

Creation (रचना) को —

''एको अहं बहुश्याम''

कहकर बना दिया —

एको कवाओ तिस ते होय लख दरियाओ।

ख्याल के इजहार से एक Creation (एक रचना) Into Being (उत्पत्ति) में आ गई। समझे !

''कुन फियुकुन''

हो। बस हो गया। बड़ी भारी ताकत है कहो, वह सबको आधार दे रही है। सबकी Controlling Power है। जब उसमें इतनी महान शक्ति है, हम में भी वह शक्ति बड़े भारी Scale में है। Great is man (मनुष्य महान है), अगर इसका मुंह उस (प्रभु) के साथ जुड़ जाये, यह उसका Mouthpiece (मुख) बन जाये तो वही ताकत इसमें है, कोई फरक नहीं। हम अपनी इस, क्या कहना जातीयत (निज रूप) को भूल गये, कमजोर, निर्बल हो गये। हमारी आत्मा मन इन्द्रियों के घाट पर फ़ैलाव के कारण बड़ी कमजोर, बड़ी निर्बल, खौफ खा रही है, क्योंकि यह माना गया है कि चौरासी लाख जीया जून में से यह सरदार जूनी है, मनुष्य जीवन। अगर मनुष्य ज़मीनी न रहे तो। देखो ना, हैवानों (पशुओं) की तरफ, परमात्मा ने कई श्रेणियां पैदा की हैं। हैवान पैदा किये हैं, परिन्दे (पक्षी) पैदा किये, कीड़े मकोड़े पैदा किये, और इन्सान पैदा किये हैं। उनकी बनावट में बड़ा भारी फ़र्क है। हैवान की शकल, मुंह, हमेशा ज़मीन की तरफ है, ऐसे बनाया है। अगर वह सारी उमर ज़मीन की तरफ, खाने पीने, भोगने में रहे तो कोई बड़ी बात नहीं —

बिनगर दर हैवाँ कि सर सूये जमींदारद।

हैवान की तरफ़ नजर मारकर देखो कि उसका सिर प्रभु ने जमीन की तरफ बनाया है।

तो आख़र आदमी सर बबाला कुन।

तू इन्सान है, तेरा मुंह तो ऊंचा बनाया है, नीचे नहीं। देख, ऊपर देख। और यह ऊपर का देखना, यह कुदरती है।

जो परमात्मा को नहीं मानते वह भी कहते हैं, ख्याल ऊपर ही जाता है। हबशी लोग हैं, अफ़्रीका में। तो हमारे एक रिश्तेदार थे, वह अफ़्रीका में गये। ठेकेदार थे। तो हबशियों को कहते थे, देखो भई हम खुदा को कहेंगे, चिट्ठी लिखेंगे, वह तुमको पानी न भेजे। तो वह कहते, यह काम न करना, खुदा को न लिखना जो आसमानों पर बैठा है। जब भी दिल से प्रार्थना उठती है तो ख्याल ऊपर, आंख ऊपर ही जाती है। अगर यह ऊपर देखना सीख जाये तो

काम बन जाये कि नहीं ! इसका देखना रहा इन्द्रियों के घाट पर, इन्द्रियों के घाट नीचे सब बाहर की तरफ खुले हैं, और नीचे की तरफ, ऊपर की तरफ नहीं। ऊपर की तहफ ठीक ठिकाना है, दर्वाजा कहो, जो ऊपर की तरफ खुलता है। उसका आम लोगों को पता नहीं।

जो मनुष्य जीवन पाकर — मैंने यही कहा था कि हम इन्सान हैं। इन्सान में आकाश तत्व प्रबल है। यह सत्य और असत्य का निर्णय कर सकता है। असत्य से मुंह मोड़कर सत्य को ग्रहण कर सकता है। यह इसमें फ़ज़ीलत (बड़ाई) है जो और किसी जूनी में नहीं। इसीलिये इसको हंस भी कहा है। हंस में यह होता है कि पानी और दूध मिला दो तो चोंच डाले, पानी अलेहदा दूध अलेहदा हो जाता है।

हंसनी छानों दूध और पानी।

दूध को पी लो, पानी को छोड़ दो। क्या मतलब कि जो सत्य वस्तु है उसको ग्रहण करो, असत्य से मुंह मोड़ो। सत् किसको कहते हैं ? सत् उस चीज़ को कहते है जो कभी न बदले, लातगैय्यर, लातबदल (परिवर्तन रहित) Unchangeable Permanence जो है, एकरस रहने वाली, उसका नाम सत् है। और असत् वह है जो बदल रहा है। ज़र्रा-ज़र्रा बदल रहा है। Matter is changing, तो इसमें सत् क्या है और असत् क्या है ? सन्तों ने इसका भी निर्णय किया है।

साधो यह तन मिथ्या जानो। या भीतर जो राम बसत है, साचा ताहि पछानो ॥

यह तन मिथ्या है, बदल रहा है, एक रस नहीं रहने वाला, जगत सारा ही असत् है क्योंकि वह Matter का (मादे, जड़ प्रकृति) का बना हुआ है। Matter के ज़र्रे (कण) सात साल में बिलकुल Renew हो जाते हैं, हड्डियां भी बदल जाती हैं। मगर इसमें जो आत्मा है, वह सत् है। वह अजर है अमर है। अगर वह अपने शरफ़ (बड़ाई) को सम्भाल ले तो यह परमात्मा का नायब है दुनियाँ में, खलीफा है कहो।

तू थी सत्नाम की गोती।

बतलाया इसी बात को कि तू सत्नाम की गोत वाली थी ए आत्मा, अरे भई मन चूहड़े के साथ लग गई, इन्द्रियों के भोगों रसों में आ गई। तो समाजें महापुरूषों ने बनाई किस लिये, कि इन्सान अपनी जिन्दगी के राज़ (भेद) को जाने। बेशक सारी दुनियाँ की धर्म पुस्तकें पढ़लो, जब तक इस जिसम की दो-वरकी किताब नहीं पढ़ते, हकीकत नहीं खुलती। तो समाजें महापुरूषों ने बड़े Noble Purpose (ऊँचे आदर्श) से बनाई हैं। किस लिये कि इन्सान अपनी ज़िन्दगी के राज़ को जाने। तो ज़िन्दगी का राज़ क्या है ? यह जिस्म है पांच-छह फूट का पुतला, यह चल रहा है। कब तक ?

तिच्चर वसे सहेलड़ी जिच्चर साथी नाल। जां साथी उठि चलिया तां धन ख़ाकुराल ॥

इस जिसम की सहेली उस वक्त तक आबाद है जब तक इसका साथी इसके साथ है। वह कौन है ? वह तुम हो। जब वह इससे जुदा होता है तो चार भाई उठाकर शमशान भूमि में पहुंचा देते हैं।

आघ घड़ी कोई न राखत घर ते देत निकाल।

मगर एक और बात भी देखी गई है कि उस साथी से जिसम आबाद नहीं बल्कि वह साथी इस जिसम के साथ किसी आधार पर कायम है। वह भी खुदमुख्तार (आजाद) नहीं कि जब चाहे निकल जाये जब चाहे आ जाये। जो वह Controlling Power (करन कारन ताकत) है ना, इजहार में आई ताकत, जिसको परमात्मा कहते हैं, वह इसको Control कर रही है। एक दो दस गोलियां लगती हैं, नहीं मरता। एक का पांव फिसलता है, मर जाता है। सांस बाहर जाता है, वापस आता है। क्यों आता है ? न आये। बाहर ही रह जाये ! कोई चीज़ Control कर रही है ना !

तो सारे संसार को चलाने वाली एक शक्ति है, शक्ति कह दो, Conscious (चेतन) शक्ति। दो किसम की शक्तियां आती हैं, एक अन्धी (Blind) एक चेतन। वह चेतन शक्ति है जो सब खण्डों ब्रह्मण्डों को Control कर रही है (चला रही है)। वह पावर क्या है ? वह God into expression Power है । वह परमात्मा जो इजहार में आई ताकत है, उसको नाम कहते हैं।

नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।

उसको शब्द भी कहते हैं, उसको कलमा कहते हैं, जो इज़हार में आई ताकत है। वह खण्डों ब्रह्मण्डों को Control कर रही है। हमारी आत्मा को भी जिसम के साथ कायम रखती है, जब वह आधार जिसम से हटता है जिसम की प्रलय हो जाती है। जब वह आधार खण्डों ब्रह्मण्डों से हटता है यो खण्डों ब्रह्मण्डों की प्रलय और महाप्रलय हो जाती है। देखो कितना बड़ा ब्रह्मण्ड है, एक छोड़के —

कोट ब्रह्मण्ड को ठाकुर स्वामी।

करोड़ो ब्रह्मण्ड हैं। यह एक ब्रह्मण्ड नजर आ रहा है जिसको थाह हम नहीं पा सकते, इसमें ऐसे ऐसे सय्यारे हैं जो पांच पांच हजार साल में एक बार अपने Orbit (घेरे) में चलते नजर आये हैं अब तक, पांच हजार साल में एक बार। बताओ। अकल चक्कर खाती है। इस सारी सृष्टि को जो Control में रख रहा है।

नानक नावें के सब किछु वस है। पूरे भाग कोई पाई ॥

वह Controlling Power (करन कारन सत्ता) जो सबको Control कर रही है, बड़े भागों से उसका Contact मिलता है। वह हमारा भी जीवन आधार है । यह है राज़े ज़िन्दगी (जिन्दगी का भेद) जिसको हल करने के लिये समाजें बनाई गई हैं। समाजें हमारे लिये बनाई गई, हम समाजों के लिये नहीं बने हैं। याद रखो बड़ी भारी भूल है जिसमें हम जा रहे हैं। यह (समाजें) Means to an and हैं (एक चीज को पाने का साधन मात्र हैं) बड़े Noble Purpose के लिये यह बनीं, हर एक समाज का बड़ा Noble Purpose (उच्च आदर्श) है। वह क्या, कि मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिला है। इन्सान मनुष्य जीवन का राज़े ज़िन्दगी जो है, इसको जान ले। बस।

इल्लते जुमला इल्महा ईं नस्तो ईं।

सारे इल्मों की इल्लत ग़ाई (सार) क्या है, ताकि तू इस बात को जान ले कि तू कौन है। Gnothi Seaton पुराने यूनानियों ने कहा जिसका अर्थ है, अपने आप को जानो। Man know Thyself ए इन्सान अपने आपको जान।

कहो नानक बिन आपा चीन्हे मिटे न भ्रम की काई।

जब तक अपने आपको नहीं जानते यह भ्रम मिटता नहीं। यह भ्रम क्या है ? जो असल में चीज किसी और रंग में हो, नजर किसी और रंग में आये। सारा जिसम और जगत बदल रहा है। जगत असत है और आत्मा सत है। मगर हमें जगत सत भासता है। आत्मा का पता ही नहीं। तो इस राज़े ज़िन्दगी को जानने के लिये समाजें बनाई गईं हैं। स्कूल और कॉलेज बनाये गये। किस लिये ? कि लोग बी.ए.,एम.ए. बनें ! समाजों की ग़र्ज तो असल में यह है। सब स्कूलों की ग़र्ज एक ही है कि नहीं ? सब डिग्रियां लेकर जायें। यह अलेहदा बात रही कि कोई पढ़े या न पढ़े। अगर दाखल हुआ है तो पढ़ने के लिये हुआ है। अगर पढ़कर अपने आदर्श को भूल जाये —

चाले थे हरि मिलन को बीच ही अटक्यो चीत।

दुनियां इन्हीं झगड़ों में लग रही है। Foresight (दूरन्देशी) से काम न लेने के कारण उसका नतीजा क्या है, कि वही समाजें जो बड़े Noble Purpose (नेक मकसद) के लिये बनी थीं, The same good old custom corrupts itself. यह समाजें अपने उद्देश्य को भूल गईं, इनका पतन हो गया।

तो महापुरूष क्या कहते हैं कि इन्सान — महापुरूष किसको कहा है ? जो सत् का स्वरूप है, जो अनुभवी पुरूष है। वह किस Level (दृष्टि) से तुमको देखता है ? समाजों के लेबलों से नहीं। सारी समाजें उसको प्यारी हैं। मगर वह देखते हैं समाजों का लेबल लगाने वाले कौन

हैं ? आत्मा देह-धारी। उसका Level आत्मा से है।

सत्गुर ऐसा जानिये जो सबसे लये मिलाय जियो।

मगर हम लोग क्या करते हैं ? समाजों में दाखल हुये थे प्रभु की फौज में दाख़ल होने के लिये। चलो Direct Talk कर लो (सीधी तरह यूं कह लो) कि हमारी आत्मा उस जाते हक में (सच्चिदानन्द प्रभु में) फिर वासल (लीन) हो जाये, यह सत्नाम की गोत वाली थी उसमें जाकर समा जाये, जाग उठें कह दो, बाहर इन झमेलों से आज़ाद होकर। समाजें इसीलिये बनाई गईं थीं। उसके दो पहलू हैं, समाजों के, हर एक समाज के। एक बाहिरी दूसरा अन्तरी। बाहरी पहला कदम है। इसको अपराविद्या कहते हैं। ग्रन्थों पोथियों को पढ़ो, उनमें क्या दिया है ? जिन्होंने हकीकत को पाया है, वहां उनके बयान हैं। वह (अनुभवी महापुरूष) देखकर बयान करते हैं, सुनी-सुनाई, पढ़ी-पढ़ाई नहीं। उसने (अनुभवी पुरूष) ने Self Analysis करके अर्थात् अपनी आत्मा को पिण्ड से ऊपर लाकर, शरीर के बन्धन से आजाद करके, अपने आपको जाना है और प्रभु को पहचाना है। क्योंकि परमात्मा का अनुभव केवल आत्मा ही कर सकती है, वह न इन्द्रियों से जाना जाता है, न मन से, न बुद्धि से, न प्राणों से। परमात्मा का अनुभव करना है तो आत्मा ने।

तो हर एक समाज में महापुरूष आये हैं। जब जब आये वह यह पेश करते रहे। जितना जितना उन्होंने पाया उतना उतना बयान करते गये। जो Highest (उच्चतम) दर्जे के महात्मा आये सब ने यही कहा कि एक Ultimate Goal (आखिरी मन्जिल) है, जो Absolute है, अनाम है, अशब्द है। उसको अनेकों नामों से याद किया, किसी ने स्वामी कहा, किसी ने राधास्वामी कहा। किसी ने निराला कहा, किसी ने महादयाल कहा, यह Theory (सिद्धान्त) है, कबीर साहब से, सन्तों से, परमपरा से चली आई है। महापुरूष का अपना उसका अपना अपना नाम लेते रहे। हकीकत वही है। जब इज़हार में आई है तो उस को सत्नाम या सत्पुरूष कहा है। उसके Different Phases (पहलू) हैं, अपने अलग-अलग, अगम अनामी वगैरा, पर वह उसी एक की Degrees हैं। वह चीज न प्रलय में गिरती है न महाप्रलय में गिरती है। उस देश के हम वासी हैं।

बेग़मपुरा शहर को नाव।

वहां पहुंचना था। हम कभी उस देश के वासी थे। या कहो हम कभी प्रभु की गोद में थे। जब से दुनियाँ में आये, कब से, यह कोई अन्दाजा नहीं लगा सका —

थित बार न जेती जाणें रूत माह न कोय। जां करता सृष्टि को साजे ओह जाने॥

नहीं तो हिसाब लिख देते। तो कब से हुये, जब से हुए अब तक हम वापस नहीं गये। नहीं

तो हम किसी और रंग में बैठे होते, किसी और अनुभव में होते, हमारी यह अवस्था नहीं होती जो अब बन रही है। हमें पता ही नहीं क्या होता है। अपने आपको होश नहीं, उस जीवन आधार का होश नहीं। तो समाजों में हम दाखल हुये थे प्रभु के पाने के लिये। वही समाज मुबारक है, जिसमें आपने रहकर उसको पा लिया। इस रस्ते में दो रूकावटे हैं हमारी, एक इसका मुंह नीचे की तरफ है, फैलाव की तरफ है। इन्द्रियों के घाट पर बाहर फैलाव में जाकर बाहरी संस्कार ले लेकर दुनियां और जगत का रूप बना बैठा है।

साईं दा की पावणां, इधरों पटणा ते उधर लावणां।

Inversion का, इन्द्रियों को उलटने का सवाल है। या कहो ऊपर देखने का सवाल है, इन्द्रियों के घाट से ऊपर देखने का सवाल है, इन्द्रियों के घाट से ऊपर —

लगाओ सुरत अलख अस्थान पर, जां को रटत महेशा।

कहते हैं अपनी सुरत को उस जगह लगाओ जो इन्द्रियों के घाट से लखी नहीं जाती है, यह इन्द्रियों के घाट से ऊपर है। इन्द्रियां कहां खत्म होती हैं ? यहां दो कान, नासिका, मुंह, जिसम, इसके ऊपर सुरत को लगाओ। कहां पर ? ''जां को रटत महेशा'' जहां शिव भगवान जी ताड़ी लगाये बैठे हैं। शिवनेत्र कहां बनाते हैं ? ऊपर माथे पर, इन्द्रियों के घाट से ऊपर। अगर यह ऊपर देखने लग गया, उसमें महारस है, इन्द्रियों के भोग रस फीके पड़ गये।

जब ओह रस आवा एह रस नहीं भावा।

मगर इसके अलावा एक और जकड़ में हम फंस रहे हैं। समाजों की जकड़ में। यही समाजें हमको आज़ाद करने के लिये बनाई गई थी, आत्मा को मन इन्द्रियों से आज़ाद करके अपने आपको जानकर, उस परिपूर्ण परमात्मा में समाकर कहो, सारा विश्व ही उसका अनुभव में आने लग जाये, Self-Analysis से (पिण्ड से ऊपर आकर) Cosmic Consciousness (आत्म अनुभव) में जाग उठे, अपने आपको जाने और फिर जीवन आधार को जाने और फिर सबकी Background (सब के आधार) Absolute को, अनाम, अशब्द, स्वामी, महादयाल, को जाने। यह था आदर्श, मगर हम कहीं न कहीं बन्धे पड़े हैं। पहले यह जिस्म का बन्धन है, फिर इसके साथ इन्द्रियों के भोगों रसों का बन्धन है। इसके साथ बाल बच्चों का, स्त्री का, दोस्तों का, मित्रों का बन्धन है, उसके साथ Name and Fame मान बड़ाई नाम, समाजों, लोक-लाज, कुल-लाज, यह बन्धन में पड़ गये। एक बन्धन थे, दो थे, तीन थे, और इससे बढ़कर और एक बन्धन समाज का पड़ गया। वही मैं अर्ज कर रहा था बड़े Noble Purpose (नेक मकसद) से जो समाजें बनाई गई, वही हमारे पांव की जंजीर, हाथों की हथकड़ियां और गले के तौक बन गये। समाजों में दाखल होने का

मतलब क्या था ? यह कि आप प्रभु की फौज में दाखल हो जायें। वही अच्छा है, वही कालेज अच्छा है, जिससे तुम निकल कर उस आजादी को पा गये, अपने आपको जान गये, प्रभु में जाग उठे।

सूना पड़ा तेरा तखत और ताज।

स्वामी जी महाराज फरमाते हैं, उस अपने राज को जाकर सम्भाल लो। मगर हो क्या रहा है —

चाले थे हरि मिलन को बीच ही अटक्यो चीत।

समाजें सब अच्छी हैं, समाजें बुरी नहीं यह याद रखो। समाजों की तालीम अच्छी है। हर समाज में महापुरूष आये हैं, अपने अपने तरीके से बयान कर गये, या जितना जितना ऊपर गये उतना उतना बयान कर गये। कम से कम ऊपर देखने का सिलसिला शुरू हुआ, इन्द्रियों के घाट से ऊपर का, क्योंकि पराविद्या शुरू होती है जब आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ, आसान तरीके से या मुश्किल से, जमाने जमाने में जो तरीका रहा। पहले प्राणों को संयम था। प्राणों की कुभंक करके फिर आगे चलते थे, इन्द्रियों के घाट से ऊपर। उसके लिये फिर कई और चीजें जरूरी करनी पड़ गई — नेती, धोती, बस्ती, फिर हठ योग के साधन। हृष्ट-पुष्ट बनकर, कुंभक करके फिर इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाते थे।

सन्तों ने यह देखा कि जमाने बदल गये, हालात बदल गये, आयु नहीं रही, लोग हृष्ट-पुष्ट नहीं रहे, इसलिये उन्होंने प्राणों को बीच से निकाल दिया, इस ख्याल से कि वह परमात्मा न इन्द्रियों से जाना जाता है, न मन से, न बुद्धि से, न प्राणों से, इसलिये प्राणों को छोड़ ही दो, सिर्फ सुरत को एकत्र कर लो थोड़ा। वह Experience (अनुभव) दे देते हैं कि कैसे ऊपर आ सकते हैं। यह अपने बस की बात नहीं है। थोड़ा सा उभार ले लो, फिर वह तुमको जो यहां का वाकिफ़ है, जिन्दगी के राज़ का, और अगली दुनियां में भी तुमको मदद कर सकता है , उसको पकड़ लो। तो मैं यह अर्ज कर रहा था कि किसी समाज में भी आप हो, मुबारक हो। समाजें पीछे बनाई गई, आत्म उन्नति के लिये, ताकि हम अपने आपको बन्धनों से आजाद करके अपने को जानें और प्रभु को जानें। बस। ऐसे पुरूष को सब आत्मा देह-धारी प्यारे हैं। जिनको थोड़ी झलक भी मिली है, वह इसी बात का प्रचार करते रहे। जो उन बन्धनों ही में रहे, मेरी डबिया अच्छी है, दूसरे की डबिया खराब है, बस मेरे दड़बे से कोई निकल न जाये, मुझसे न चला जाये। अरे भई प्रचार करना अधिकार था, अनुभवी पुरूषों का। जिसने अनुभव किया है, उसका तो सबसे प्यार है। उसकी पहिली निशानी यही है कि सबको मिला करके बैठे।

बिसर गई सब तात पराई, जब ते साध संगत मोहि पाई।
ना कोई बैरी नाहीं बिगाना, सकल सँग हमरी बन आई।

हमारे हजूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) थे। वह कहते, यह चीज़ हमको मिली है, तुमको दी है। जाओ कहीं इससे अच्छी चीज़ मिले, तुम भी लो, मुझे भी कहना, मैं भी लूंगा। हम सच के पुजारी हैं ना, फिर हमें डर क्यों लगता है एक दूसरे से मिलने से ? कि सच हमारा, कहीं हमारी चीज़ सच न हो। शक है। अगर देखी हो तो क्यों डरे ? मुझे अमेरिका वगैरा और आगे दूसरे मुल्कों में जाना पड़ा। मुझे पता था कि यह सच चीज़ है। हजारों में Stand करता था। जब आप ही भरोसा न हो ? तो देखने का सवाल है। शायद है, शायद नहीं है, आलिमों (विद्वानों) में यह काम रहेगा। जो अनुभवी पुरूष है, वह कहता है हाँ मैंने देखा है। बस ! बड़ी Conviction (भरोसे) के साथ। तो मेरे अर्ज करने का मतलब क्या है आपको पता है। समाजें सब अच्छी हैं। जिस गर्ज़ से शामिल हुए हो समाजों में, उस गर्ज़ को पालो, उसको नहीं भूलो। और कितनी देर में उस गर्ज़ को पाने का यत्न करो ? जितनी देर तुम इस जिस्म में कायम हो प्रारब्ध कर्मों के अनुसार।

लेखे सास ग्रास।

यह जिन्दगी का जो समय बच रहा है, उसका पूरा फ़ायदा उठा लो। आप कहेंगे उमर गुज़र गई। चलो जो गुज़र गई गुज़र गई, आगे से खड़े हो जाओ। समाजें कोई बुरी नहीं, फिर मैं यही अर्ज़ करूंगा। तालीम सब महापुरूषों की वही तकरीबन रही है। उनकी तालीम मुक्ति के लिये है, जो परा है, वह रही है, अपरा नहीं है। अपरा नेक कर्म हैं, इसका फल आपको नेक मिलेगा, मगर आना जाना खत्म नहीं होगा। जितने भी महापुरूष आये हैं थोड़ा-थोड़ा इशारा इसका देते गये। गीता में भगवान कृष्णजी का ज़िकर आता है कि दो पन्थ हैं। एक पितरियान पन्थ, एक देवियान पन्थ। पितरियान पन्थ तो कर्म काण्ड का है। जो उसमें रूह रहती है वह आती जाती रहेगी। जो देवियान, ज्योति मार्ग वगैरा में जायेगी वह रूह फिर वापस नहीं आयेगी। इशारा तो दे दिया है। जब पूजा पाठ करते हैं तो ज्योति जगाते हैं। तो ज्योति जगाते हैं कि नहीं ? सनातनी भाईयों में अन्त समय जब आता है, कहते हैं, जल्दी करो दीवा मंसाओ, नहीं तो बेगता मर जायेगा।

सुन्न महल में दीयना बारि ले।

यह कबीर साहब कहते हैं। यह सबके अन्तर ज्योति का विकास है और प्रणव की ध्वनि हो रही है। जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर चले, ऊपर चले, ऊपर देखने लगेगा ना। जब इन्द्रियों के ही घाट पर रहा तो कैसे होगा ? तो इसलिये जिस-जिस महापुरूष की बाणी आप लोगे, वही चीज पेश करेंगे। यह एक Common Ground (सांझी धरती) है अब तुम्हारी।

तो मैं यह अर्ज करूंगा कि मिल बैठना सीखो।

होय एकत्र मिलो मेरे भाई, दुबिधा दूर करो लिव लाई।
हर नामे की होओ जोड़ी, गुरमुख बैसो सफ़ा बिछाई।

मिल कर बैठना सीखो, मिलकर बैठोगे तो एक दूसरे को समझ सकोगे। एक कुछ कहता है, एक कुछ, एक दूसरे के लिये Bug Bears, हव्वा बने पड़े हैं। एक दूसरे को समझोगे दिल से नजदीक हो जाओगे, क्योंकि हैं तो सब एक ही के पुजारी कि नहीं।

सैकड़ों आशिक हैं दिलाराम सबका एक है।
मजहबों मिल्लत जुदा हैं काम सबका एक है।

इस बात को समझना है। समाजों वाले भाई जो हैं उनके लिये भी हमारा शुकराना है, अगर वह सही प्रचार करें। सही प्रचार क्या है ? यह (समाजें) स्कूल और कालेज हैं जिनमें हम दाखिल हुये थे, जिन्दगी के राज़ को पाने के लिये, Mystery of Life को जानने के लिये, अपने आपको पहचानने के लिये, जीवन आधार को जानने के लिये। क्यों साहब यही आदर्श सबका है कि नहीं ? तो झगड़े काहे के हैं ? World Religions Conference (विश्व धर्म सम्मेलन) में यही चीज पेश की गई। सबको बड़ी Appeal हुई। क्यों न हो, आखिर सच Appeal करेगी (दिल को लगेगी)। यह सब झगड़े हमने बना रखे हैं, गलत प्रचार के कहो। समाजों का कोई कसूर नहीं। पेट प्रचार गर्ज़मन्दों (स्वार्थियों) का न जानने वालों के प्रचार करने का कसूर है।

मेरे अर्ज करने का मतलब क्या है ? आप इस जगह आये हो, होश में आओ। मैं किसी समाज को छेड़ता नहीं। हमारे हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज), फर्माया करते थे कि कुएं बड़े लगे पड़े हैं, एक और नया कुंआ और लगाने की क्या जरूरत है ? और तब लगाया जाये जो आगे यह तालीम न हो। यहां रघवाचार्य जी आये थे। उन्होंने दो तीन दिन Talks भी दी। वह वेदों के मंत्र पेश करते थे। वही चीज बिल्कुल जो सन्तों की बाणीं है। वह कहते हैं, हमने तो सारी उम्र — एक सौ तीस साल की आयु अनकी है, सारी उम्र में पढ़ पढ़कर इस बात को पाया है, तुमने सहज ही गुरू के चरणों में पाली यह गति। तो याद रखो मनुष्य जीवन पाकर अगर कोई सुलझा हुआ पुरूष मिल जाये, नाम अब कुछ तो रखना हुआ ना, क्या किया जाये। क्योंकि साधु सन्तों के नाम से तो आज हमारे दिल में नफरत है। चलो भई सुलझा हुआ इन्सान कह दो, जाग उठा इन्सान कह दो, उसके पास बैठ जाओ। अगर मनुष्य जीवन पाकर वह नहीं मिला, मनुष्य जीवन बर्बाद चला गया।

दसवें गुरू साहब से पूछा गया कि आप सिख की तारीफ कर दो। कहने लगे कि मेरी नजर

में तो सारा जहान ही सिख है। देखिये अनुभवी पुरूषों का नजरिया। महाराज वह कैसे ? कहने लगे जबसे बच्चा पैदा होता है, पैदा होकर मरने तक शिक्षा धारण करता रहता है। जो शिक्षा धारण करे वह सिख। हां गुरू सिख बनना चाहिये। तो मनुष्य जीवन पाकर जब तक कोई अनुभवी पुरूष नहीं मिलता, उसका नाम कुछ रखो, सत्गुरू रखो, जो सत् का स्वरूप हो गया, गुरू रखो, साधु रखो, सन्त रखो, भाई रखो, बुजुर्ग रखो, उस्ताद रखो, अगर वह नहीं मिला तो मनुष्य जीवन बरबाद चला गया। तो इस मजमून पर आपको पता है, यहां हर एक महापुरूष की बाणीं ली जाती है। आज तुलसी सहाब की बाणीं आपके सामने रखी जायेगी। वह क्या कहते हैं ? मजमून तो कई आते हैं। फिर ख्याल आता है कौन सा लिया जाये, कौन सा न लिया जाये। चलो भई जो आता है वही लिया जाये। तुलसी साहब की वाणीं है, गौर से सुनिये। यहां पर यह याद रखो कि किसी समाज का Tinge (रंग) नहीं। तुम इन्सान हो, इन्सान बनो। बड़ी मोटी बात। अपनी जिन्दगी के राज को जानो जिसमें सब समाजें अपनी हैं, सब मुल्क अपने हैं।

पिया दरस बिन दीदार दर्द दुख भारी।

कहते हैं प्रीतम के दर्शन के बगैर बड़ा भारी दुख है। कौन ? आत्मा का प्रीतम ! कौन ? परमात्मा, जिस जाते हक का यह कतरा है। तो कहते हैं, हे प्रीतम, हे प्रभु, तेरे बगैर हम बड़े दुखी हैं। और सारा जहान ही कहता है। गुरू नानक साहब ने कहा —

नानक दुखिया सब संसार।

तुलसी साहब भी यह कहते हैं कि हे प्रभु तेरे बगैर हम बड़े दुखी हैं। कौन सुखी है ?

सो सुखिया जिस नाम आधार।

जो परिपूर्ण परमात्मा से जुड़ गया वह सुखी, बाकी सब दुखी। यही स्वामी जी महाराज फ़र्माते हैं।

सुरत तू दुखी रहे हम जानी। जां दिन ते तू सबद बिसारा मन संग यारी ठानी॥

बात तो यह है। एक ही बात कह रहे हैं। कहते हैं हे प्रीतम, तेरे दर्शन के बगैर हम बड़े दुखी हैं। आत्मा चेतन स्वरूप है। याद रखो हम आत्मा देह-धारी हैं। मैं यही पेश कर रहा था आत्मा चेतन स्वरूप है। यह देखो, यह जिसम भी रखता है बुद्धि भी रखता है, और आत्मा भी रखता है। जिसम को हम खुराक देते हैं, जिसमानी बल मिलता है। बुद्धि को पढ़ने लिखने की खुराक देते हैं, बुद्धि के लिहाज़ से बलवान हो जाते हैं। अरे आत्मा चेतन स्वरूप को आपने क्या ख़ुराक दी ? Bread of Life चाहिये ना, Water of Life चाहिये, जिन्दगी की रोटी और जिन्दगी का पानी चाहिये ? चेतन की खुराक चेतन ही है। वह कौन है ? वह

परमात्मा ! जब चेतन आत्मा का मन इन्द्रियों से आजाद होना होगा, परिपूर्ण परमात्मा, महाचेतन प्रभु से लगना होकर, यह बलवान होगी। मैंने अभी अर्ज किया था सुरत, महान सुरत में मिलकर बलवान होगी, अगर महान सुरत दुनियां बना सकती है, सारी Creation को Control कर सकती है अरे भई हमारी आत्मा अगर उसकी Mouthpiece बन जाये तो क्या कुछ नहीं कर सकती है ? Great is man. हमने अपने वरसे (पैतृक सम्पत्ति) को सम्भाला नहीं। तो आत्मा उसके मिलने के बगैर दुखी है। जक तक नहीं मिलेगी दुखी रहेगी। दुख किस को होगा ? यह दुख कैसे पैदा होगा ? यही देखने वाली बात है। हम क्यों नहीं दुखी होते भई ? तुलसी साहब तो कह रहे हैं कि हमारी आत्मा, हे प्रभु तेरे दर्शन के बगैर दुखी हो रही है। हमारी क्यों नहीं हो रही भई ? क्या कारण है ? यह दुख हमारे अन्तर कैसे जाग उठे ? अगर यह हल हो जाये तो काम बन जायेगा कि नहीं ?

अब देखो ना, जबसे हम पैदा हुये हैं, हमारे अन्तर कुदरती तीन चीजें हैं, एक सिमरन, एक ध्यान, तीसरा सुनना। एक जबान का, एक आंख का, एक कान का। सिमरन करते करते, जिसका भाई हो, बन्धु हो, कोई हो Natural Course है, पहले किसी की याद बने, याद से उसका ध्यान सामने आने लग जाता है। जितना यह प्रबल हो जाये वह स्वाभाविक उसका ध्यान बन जाता है। उसके बगैर यह रह नहीं सकता है। यह कहो कि अगर हमने वह प्यार जिसके बगैर देखे के हम रह नहीं सकते, उसके लिये क्या करना होगा ? उसकी याद, उसका ध्यान। इसका Inevitable Result (लाजमी नतीजा) क्या होगा ? उसके देखे के बगैर रह नहीं सकते। जब मिलोगे सुखी, जब दूर रहना होगा दुखी हो जाओगे। Scientific Way है यह। तो शुरू से ही, जब से दुनियां बनी, सुमिरन और ध्यान कुदरती खासा है। और सुन सुन कर, याद रखो देखने ही से नहीं, बल्कि सुनने से भी बहुत सारा असर आता है। अग्नि प्रज्वलित हो जाती है। तो तीन जरीये अगर हम जिस चीज को पाना चाहें उस तरफ लगा दें, इन तीनों ताकतों को, तो पहले क्या बनेगा ? कि तुम उसको पाना चाहोगे, वह जिसका तुम ध्यान करोगे ना, प्रीतम,प्राण आधार बन जायेगा और उसको छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहोगे। यह पहली हालत बनेगी। तुम यही चाहोगे कि बार बार देखता रहूं मैं जिसकी याद की, जिसका ध्यान बना, जिसके बारे में सुन सुनकर जी खुश हो —

कोई आन मिलावे मेरा प्रीतम प्यारा।

आता है ना, फिर आता —

मेरे हर प्रीतम की कोई बात सुनावे, सो भाई सो मेरा मीत।

जिसकी याद, जिसका ध्यान बने, बेअख्त्यार उसके मुतल्लिक सुनना चाहता है। सुन

सुन कर याद कर करके दिल में ध्यान बना बनाकर बेअखत्यार रूचि क्या बन जाती है ? उसके प्रीतम के देखे बगैर रह नहीं सकता है। जब तक नहीं मिलता यह दुखी होता है। यह महापुरूषों की यह हालत कैसे बनी ? इसी तरह से। तो मैं यह अर्ज कर रहा था कि अगर हम भी चाहते हैं यही कलमा हमारी जबान से निकले कि हे प्रीतम ! तेरे दर्शन के बगैर हम बड़े दुखी हैं — हम बच्चों के दर्शन के बगैर बड़े दुखी हैं मुआफ करना। देखो सारंग है, स्वांती बून्द के बगैर दुखी है। हर वक्त उसका सिमरन है ना, उसका ध्यान है, उसी के साथ जुड़ना चाहता है। चकोर लगातार चांद को देखना चाहती है, उसके बगैर दुखी है। माता अपने पुत्र के बगैर बिछोड़ में, क्योंकि उसका सिमरन ध्यान कर करके स्वभाव बन गया है ना। उसके बगैर रह नहीं सकती। दो मिनट, आधा घण्टा न नजर आये तो तड़प उठती है। स्त्री, पति से दूर रहकर वियोग में बिलकती है। कैसे बना यह बिलकने का सामान ? याद कर करके, और ध्यान कर करके। मछली पानी के बगैर अशान्त रहती है। इसी तरह भई हमारी आत्मा परमात्मा के बगैर कुदरती बात है, तड़प जाती है। तो उस तड़प को पैदा करने के लिये हमें क्या करना होगा ? याद और ध्यान, और उसी के मुतल्लिक चर्चा सुनना। कई भाई सवाल करते हैं, जो महात्माओं में ऐसी गति बन गई, हमारे में नहीं बनती? उस सवाल का जवाब है, यह पल्ले बान्धो। जिनके अन्तर यह गति नहीं बनी उनके अन्तर कैसे बनी ? ऐसे ही बनी। यही एक असूल है कुदरती। और याद रखो जहां फलदार दरख्त में शगूफा न पड़े, फल नहीं पड़ता। इसी तरह प्रभु प्राप्ति के लिये यह अन्तर बिरह कह दो, तड़प कह दो, उसकी याद में दो आंसू बहना कह दो, यह जब तक नहीं बनती, समझो अभी प्रभु आने वाला नहीं। बड़ी मोटी बात।

हम दुनियां के लिये तो तड़पते नजर आते हैं, मुआफ करना, बच्चा बीमार हो, मरने का खौफ हो, आंसू बेअख्त्यार बहते हैं, हाय मैं क्या करूं ! रूपया लाखों गुम हो जाये, दिल धड़कता है। लगन बन चुकी है। कैसे बनी ? सिमरन कर करके, ध्यान करके, और उसी का जिकर सुन सुनकर। तो जिस तरह उधर बनी है, उसी तरह इधर बनाओ, सिमरन। दुनियां के सिमरन को प्रभु सिमरन से काटो। जैसे हमारा Subconscious Reservoir (अन्तर का भण्डार) उसकी याद से भर गया, सोते में बरड़ा कर भी वही दुनियां निकलती है, इसी तरह प्रभु का सिमरन और ध्यान, याद कर करके, उसी की चर्चा सुनकर बैठते उठते, चलते-फिरते, खाते पीते, वह Reservoir खाली हो जाये पहले संस्कारों से, नये सिरे से भर जाये (प्रभु सिमरन से) Overflow (उमंड कर) होकर, तुम्हारे बरड़ाने में भी निकले, यह अवस्था बन जाये, कहते हैं जिस पुरूष की यह अवस्था बन जाये, कबीर साहब कहते हैं, हम क्या देंगे ? तो फरमाते हैं —

सुपनेहूं बरड़ाय के जित मुख निकसत राम। तिसके पग की पाहुनी मेरे तन को चाम ॥

ऐसे पुरूष के पांव के लिये मैं अपना चमड़ा देने को तैयार हूं जूतियां सिलाने को।

आम लोग सवाल करते हैं कि जी हमारे अन्तर प्रभु की लगन क्यों नहीं लगती ? अरे भई जैसे दुनियां की लगन लगी है वैसे ही उधर करो, लग जायेगी। करके देखो। भई इसलिये साधक अवस्था में दुनियां के जरूरी काम कर लो मगर जरूरी काम भी उसी के समझ के करो। फिर जितना वक्त मिले उसी की याद, उसी की बात, उसी की सुनना, लगातार रहे। यह दुनियां के पुराने दबे हुये संस्कार निकलते जायेंगे, नये बैठते चले जायेंगे। याद रखो जिसकी लगन बन जाये, फिर लू लू में एक खिचावट महसूम होती है। जो इस हालत से गुजरा है, कम से कम प्रभु प्राप्ति के लिये, यह नहीं कि दुनियां के ताल्लुक में। दुनियां के लिये तो ऐसी हालत हुई है कि नहीं ? खिचावट जैसी महसूस होती है। उकसाहट होती है। समझे!

अज न सुत्ती कन्त सों मेरे अंग मुड़े मुड़ जाये।
जाय पूछो दुहागणीं तिनहा क्यों कर रैन बिहाय ॥

कि आज हमारी आत्मा का प्रभु से मिलाप नहीं हुआ, मेरे अंग अकुला रहे हैं। कहते हैं जिनको कभी नहीं मिला उनसे पूछो उनकी क्या गति है ? तो सन्त हमेशा ही प्रार्थना करते हैं कि हे मालिक ! हमारी आत्मा तेरी, ज़ाते हक की, कतरा है। चेतन स्वरूप तू है, तू हमारी सच्ची खुराक, सच्चा जीवन आधार है। तू किसी तरह से मिल। जब ऐसी जबरदस्त, प्रबल हालत बन जाय तो कुदरती बात है, आप नहीं मिल सकता है तो क्या करता है ? पुकार करता है। क्या पुकार करता है ?

मैं मेलो सन्त मेरा हर प्रभु सजन।

मैं मेलो। कौन ? सन्त। कहते हैं वह क्या है ? मेरे हरि प्रभु का सज्जन। फिर क्या हो ?

मैं मन तन भूख लगईया जियो।

मेरे मन और तन में उसके पाने को भूख लग रही है। समझे !

हौं रह न सकां बिन देखे मेरे प्रीतम। मैं अन्तर विरह लिव लाई ॥

कि उसके बगैर, मैं अब देखने के बगैर रह नहीं सकती। ऐसे सन्तों से मेलो। वह प्रभु के सज्जन हैं। कोई मिला दे, मैं उसके देखे बगैर रह नहीं सकती। गुरू अर्जुन साहब ने फर्माया है।

कोई आन मिलावे मेरा प्रीतम प्यारा, हौं तिस पे आप बैचाई।

कोई भी मेरे सच्चे प्रीतम को आकर मिला दे, कहते हैं मैं आप बय खरीद हो जाऊंगा।

किस लिये, भई ?

हरि दर्शन देखन के ताईं।

हरि को मिलना है ना भाई। तो कुदरती लगन जब बन जाये। दुनियां खाती है, पीती है, रंग रलियां मनाती हैं, रात को घुराड़े मारकर सोती है। ''बिरही प्रीतम,'' जो बिरही पुरूष है वह प्रीतम के बिछोड़े में रातें हौके लेकर काटता है। यह कैसे हालत बनी ? मैं यही पेश कर रहा था पहले। वह तो खाता पीता ऐशो इशरत करता है, घुराड़े मार कर सोता है। और जिसके अन्तर प्रभु के पाने की बिरह लगी है, वह हौके ले लेकर काटता है, हाड़े निकालता है। उसकी आंखों में नींद नहीं। हौंके ले लेकर बदन सूखता चला जाता है। ठंडी आहें भरता है। समझे ! नतीजा क्या है ? उसको खाना पीना नहीं सूझता, उसके सिवाय, वह जिससे मिलना चाहता है। तो महापुरूषों ने इसी बात को, जिस महापुरूष की गति बनी है, यह उसका पेशखेमा है। यह कभी न समझो कि समय इस तरह आराम से उसने गुजारा है। गुरू नानक साहब फर्माते हैं।

मुन्द रैन दुहेलिड़िया जियो नींद न आवे।

''मुन्द रैन दुहेलिड़िया जियो।'' रात नींद नहीं आती, मैं उससे बिछुड़ी पड़ी हूं।

सा धन दुबलिया जियो पिर के हावे।

उस प्रभु के हावे ले लेकर, हौके ले लेकर मैं दुबली हो रही हूं। फिर कहते हैं क्या किया जाय कि -

धन ज़ेही दुबली कन्त हावे क्यों नैनी देखां।

कि हावे ले लेकर मेरी हड्डियां निकल रही हैं। अरे भई वह कब है ? जब आंखों से देखना नसीब होगा।

सिंघार मिठ रस भोग भोजन, सब झूठ किते न काम।

जो पाना चाहता है, प्रीतम के बगैर उसे हार सिंघार किस काम का ? समझे ! अगर वह मिल गया तो सब ठीक, नहीं मिला तो सब कुछ फजूल।

नानक कन्त बिहूणिंया मीत सजण सब जाम।

जब से नजर आते हैं। हार सिंघार कहां भाते हैं। वह क्या चाहता है, कि वह प्रीतम मेरे घर में आ जाये, इस घर में अन्तर में आ जाये।

पिर घर नहीं आवें मरिये हावे दामिनि चमक डरावे।

''पिर घर नहीं आवे''। देखो वह कहां है ? वह तुम्हारी आत्मा की आत्मा है। जब बाहर

से हटकर अन्तर बिरह और सोज़ से उस तरफ जाओगे तो पहले अन्धेरी रात है। समझे ! उसमें किसी वक्त बिजली चमकती है, चमकारे आते हैं ना अन्तर में, कहते हैं उसको देखकर भय होता है, ओहो ! मैं कहां जंगल में पड़ी हूं। इसलिये।

सेज अकेली खड़ी दुहेली मरन भया दुख माह।

इधर से निकल गया, उधर से प्रीतम मिला नहीं, इस से मरना बेहतर है।

ना जी सकिये ना मरिये।

बुल्ले शाह कहते हैं। यह अवस्था बन जाती है। यह कहां से शुरू हुई, मैं अर्ज कर रहा था। सिमरन ध्यान से और सुन सुनकर। Direction का (रूख बदलने का) सवाल है।

साई दा की पांवणां, इधरो पटणाँ ते उधर लावणा।

गुष नानक साहब फर्माते हैं एक जगह पर —

धन नाह बाजो रहे न साके, बिखम रैन घनेरिया।

हमारी रूह रूपी स्त्री जो है, उस प्रभु के बगैर रह नहीं सकती, रातें गुजारनी मुश्किल हो गईं।

ना नींद आवें प्रेम भावे सुन बेनन्ती मेरिया।

हे प्रभु मेरी बेनती को सुनो, न नींद आती है, हौकें लेकर रातें कटती हैं।

बाझों प्यारे कोई न सहारा एक लड़ी कुम्हलाय

अकेली एक लड़ी कुम्हला रही हूं। बाहर से हट गये, आगे मिला नहीं, तो कहते हैं, हे प्रभु ! तेरे बगैर मेरी सार भी कौन ले। अगर पति हो, स्त्री को न चाहे तो और किसी को क्या गर्ज पड़ी है मुआफ करना ! तो कहते हैं, हे प्रभु तू ही दया कर, हमारा तेरे बगैर कौन है !

नानक सा धन मिले मिलाई, बिन प्रीतम दुख पाय।

कि अगर तुम्हारे अन्तर यह एहसास हो गया कि उसके बगैर तुम दुखी हो तो समझो तुम मिल ही जाओगे। उसके मिलने का पहला पेशखेमा क्या हुआ, तड़प, विरह और सोज !

बिरह बिरह आखिये बिरह तू सुल्तान। जित तन बिरह न ऊपजे सो तन जान मसान॥

राबिया बसरी एक फ़कीर हुई है। उसको लोगों ने पूछा कि तू नमाज़ जो पढ़ती है, खुदा पहिले आता है या तेरी नमाज़ पढ़ने के बाद आता है ? तो कहने लगी खुदा पहले आता है, नमाज मैं पीछे पढ़ती हूं। तो पूछने लगे तुझे कैसे मालूम हुआ ? कहने लगी, जब दिल में सोज़

गुदाज, बेकरारी बढ़ती है, बेअखत्यार आंसू डुब-डुबा आते है, मैं समझती हूं वह धक्का देने वाला आ गया। तो इस हालत का बनना, समझो यह शगूफे का पड़ना है। वह आने वाला है। आप मुआफ करना, जितने भाई बहन बैठे हो, देखो तुम्हारी अवस्था क्या है ? किस मुंह से प्रभु को चाहते हो ?

हल्वा खुर्दन रा रूये बायद।

हलवा खाने के लिये भी मुंह चाहिये ना ! जबानी जमा खर्च नहीं। अगर आपके दिल की यह अवस्था बन गई, प्रभु मिलेगा, जरूर मिलेगा। यह उसके आने का पेशखेमा है। अगर यह नहीं बना, तो काम नहीं बनेगा। गुरू नानक साहब, देखो हर एक महात्मा के जीवन में देखो। मैंने एक दो महापुरूषों की बाणी पेश की अब गुरू नानक साहब क्या फर्माते हैं।

वैद बुलाया वैदगी पकड़ ढंढोले बांह। भोला वैद न जाणई कर्क कलेजे मांह॥

घर के एकलौते बेटे थे। घर वालों ने देखा चुप चाप पड़े हैं। अरे भई जिसको लगन हो ना, चुप, किसी से गर्ज नहीं, किसी से बात नहीं, वह चुप ही रहना चाहता है। कोई छेड़े नहीं उसको।

पहले याद रखो जिसका सिमरन और याद करके, सुन सुनकर दिल में स्वाभाविक कशिश बन जाती है, खिचावट बन जाती है। फिर उसके मुतल्लिक सुनना चाहता है। कोई सुनाये, वही बड़ा अच्छा लगता है। वही भाई, वही मीत बन जाता है। फिर इतनी बिरह बन जाती है कि सुनने से भी आग लग जाती है, वह सुनना ही नहीं चाहता, चुपचाप, मगन रहना चाहता है। समझे ! यही हालत बनी खुसरो साहब की। खुसरो साहब कहते हैं, उनको भी ऐसे ही तबीब आया, सिरहाने बैठकर नबजें देखने लगा। तो कहने लगे —

अज़ सरे बालीने मन बरखेज़ ऐ नादां तबीब।

ऐ नादान तबीब ! मेरे सिरहाने से उठ जा। क्योंकि —

दर्दमन्दे इश्क रा दारू बुजुज़ दीदार नेस्त॥

हम तो उसको देखना चाहते हैं, तू क्या देख रहा है ? मैं यह पेश क्यों कर रहा हूं ? हम चाहते हैं उसको पाना। हम समाजों में दाखिल हुये थे उसी को पाने के लिये। अरे भई जब तक यह ज़मीन बनी नहीं, फिर ! क्या बनेगा ? उसका आना अभी दूर है।

मैं रोवन्दीं सब जग रून्ना रूनड़े पंख पखेरू।

कि मेरे रोने की हालत को देखकर जंगलों के जो पंछी थे वह भी रोने लग गये। इतना दुख,

इतनी बिरह, इतना सोज़ था।

इक ना रूना मेरे तन का विरहु जिन्हों पियु बिछोड़े।

यह जो बिरह या सोज़ है, जब तक यह न रोया — यह रोता तो काम बन जाता। कहते हैं भई जंगलों के पंछी भी मेरी हालते-ज़ार देखकर विहवल हो गये, रोने लग गये। अरे भई यह बिरह जो मुझे लगी है इसको तरस मुझ पर नहीं आया। तो इसलिये सारे महापुरूष यही, इसी अवस्था से गुज़रते हैं। यह न कहो यह ऐसी गद्दी है कि जा बैठें। मुआफ करना, Inner Change का सवाल है जब एक प्रेम का बाज़ जहां आ जाता है वहां और कोई चीज़ नहीं रह सकती। उसकी पहली निशानी, बिरह और सोज़ कहो, तड़प कहो, फ़िराक कहो, यह उसकी निशानी है। गुरू अमरदास जी साहब फर्मात हैं —

पिर बिन खड़ी निमाणीं जीयो, बिन पिर क्यों जीवां मेरी माई।

कैसे जी सकता है ? हम कहते हैं ना मैं बच्चे के बगैर कैसे जी सकता हूं। अरे भई वह कहते हैं मैं प्रभु के बगैर कैसे जी सकता हूं। सिर्फ़ लगन का सवाल है ना ! कैसे बनी, उसको Analyse करो। जो भाई भी उस प्रभु को पाना चाहते हैं, भाई हों या बहिनें हों, भई यही पेशखेमा (पहली निशानी) है। जब यह Ruling Passion (तीव्र लगन) बन जायेगी तो कहां जाओगे मर कर ? जहां वह है ! तुम्हें दुनियां में लाने वाली कोई ताकत नहीं। किसी समाज में रहो, भई काम यहां करना है। इसके बगैर गति नहीं है।

पिर बिन नींद न आवे जी कापड़ तन न सुहावे।

कपड़े पहने भी अच्छे नहीं लगते। अगर पति घर में आ जाये तो कपड़ा पहना भी खूबसूरत है। यह दुनियां की मिसाल है। उस तरफ क्या है कि हमारा जप तप, संयम, पूजा पाठ, यह श्रृंगार है हमारा। यह तभी शोभा देता है कि जिसके लिये यह किया जाये वह आ जाये। अगर वह नहीं आया तो फिर गुरू अमरदास जी साहब ने फिर फर्माया एक जगह —

मिल मेरे प्रीतमा जीयो, तुध बिन खड़ी निमाणीं।
मैं नैनी नींद न आवे जीयो भावे अन्न न पाणीं॥

मतलब लगन का है, जिधर बन गई लगन। कैसे बनती है ?

रखो किसी को दिल में बसो किसी के दिल में।

बड़ी मोटी बात है। असूल की बात है।

पानी अन्न न भावे मरिये हावे, बिन हरि क्यों सुख पाये।

कैसे हो सकता है ?

गुरू आगे करूं बेनती ज्यों भावे, जिन मिले तिन लये मिलाय।

तू मिला है भई तू ही मिला दे, क्योंकि तेरे को तो मिला है ना, जरूरी बात। बात तो यही है। इसके बगैर इन्सान की गति न हुई न हो सकती है।

तो जिन्होंने पाया है, रो रोकर पाया है। यह बिरह इसमें शक नहीं बड़ी दुखदाई है। कई भाइयों से मिलना होता है, ऐसी हालत बयान करते हैं। मैं कहता हूं भई यह तुझसे हटा लिया जाये ? कहते हैं, ना, इसमें भी लज्जत है। इसमें मिलने की झलक है, कशिश है, जिसमें सब दुनियां गुम हो जाती है। जब एक ही एक ख्याल रह जाये —

दिल का हुजरा साफ कर जानाँ के आने के लिये।
ध्यान गैरों का उठा उसके बिठाने के लिये॥

यह तुलसी साहब फर्मा रहे हैं। वही गुरू अमर दास साहब, सब अपनी अपनी जगह फर्मा रहे हैं। दसवें गुरू साहब फर्माते हैं —

मित्र प्यारे नूँ साडा हाल मुरीदां दा कहणा। तुध बिन रोग रजाईयां दा ओडन,
नाग निवासा दा रहणा।

किस काम का जीवन है। सांपों में रह रहे हैं हम।

सूल सुराही, खंजर प्याला, ते भिंग कसाईयां दा सहणा।

कसाईयों का भिंग पता है क्या होता है ? जब बकरे को या दुम्बे को उठाकर कसाई मारता है ना जमीन पर, जो अवस्था उसकी होती है, वैसी कहते हैं हमारी हो रही है।

यारड़े दा सानूं सथर चंगा, ते भठ खेड़ियां दा रहणा।

अरे प्रभु की गोद हमें अच्छी है, इस दुनियां में क्या है ? जिसको वह रस आया है, यह दुनियां के रस भूल जाते हैं। तो असल गर्ज क्या है ?

हस हस किने न पाया जिन पाया तिन रोय।
हंसी खेली जे पियु मिले तां कौन दुहागिण होय॥

तब तो सारे ही पालें ना। समझे।

सुखिया सब संसार है खावे और सोवे। दुखिया दास कबीर है जागे और रोवे॥

तो यह मैं क्यों पेश कर रहा था, कि हम लोग आम सवाल करते हैं भई महापुरूषों से —

यही बाणी यहीं से शुरू हुई थी कि हे प्रीतम ! हम तुम्हारे बगैर दुखी हैं। अरे भई वह दुखी हैं, तो हमारे अन्तर कैसे वह दुख बने, उसका पेश किया जा रहा था। लगन उधर भी हो सकती है, सिर्फ रूख बदलने का सवाल है, इन्द्रियों के घाट की तरफ से। बाहरी फैलाव की तरफ से रूख हटाकर, जैसे बाहरी संस्कार, सिमरन ध्यान और सुन सुनकर आपके दिल में बसे हैं, उसका रूप बन गये हो, उसके लिये लगन, बिरह और सोज़ जागी है, इसी तरह उधर पलटना है। बस।

कई भाई कहते हैं चलो चटनी की तरह सत्संग कर लिया। अरे भई यह नहीं होगा। यह तो क्या कहना चाहिये, ज़र्रे-ज़र्रे, लूं लूं से सफाई करनी होगी, दुनियां को हटाना होगा। यह White-Washing नहीं कि तुम एक धब्बे पर दो चार कोट (कलई के) दे दोगे, वह छुप जायेगा। यह तो भई लूं लूं से सफाई का सवाल है। तुम्हारे रगो-रेशे में, दिल दिमाग में, बल्कि Sub-conscious reservoir (अन्तर मन में) में भी दुनियां की भूख न रहे। यह तरीका है। जिन्होंने पाया, इसी तरह पाया है। जब मुझे शौक था, मैं आपको अर्ज करूं, किताबें पढ़ा करता था। सारी रात किताब पढ़ते-पढ़ते लिख देना No way out (निकलने का कोई रस्ता नहीं) आंसू बहने और छोड़ देना। दिन को काम करना, फिर रात को पढ़ना, सारी रात पढ़ता, अरे मरता क्या न करता ! जिसकी अवस्था देखो इसी तरह से गुज़री है। हाफ़िज़ साहिब ने तो यहां तक कह दिया कि ए फ़िराक ! अगर तू मेरे हाथ चढ़ जाये, फ़िराक कहते हैं बिरह और सोज़ को, अगर तू मेरे हाथ चढ़ जाये, तेरे गले में फ़िराक की रस्सी डाल दूं , तुझे पता लगे कितना दुख होता है।

न जी सकता है न मर सकता है। मगर इसमें एक फ़ायदा है कि दुनियां सब निकल जाती है दिल से। और कोई तरीका नहीं। शम्स तबरेज साहब ने तो यहां तक कहा है कि जो आंखों से पानी गिरता है ना, यह तुम्हें बुशारत (सन्देश) दे रहा है, कि प्रभु आने वाला है। यह बुशारत दे रहा है, दिलाराम बस आने वाला है। यह सफ़ाई हो रही है। जैसे वर्षा, पानी आकर ज़मीन को साफ़ कर देती है, प्रीतम के आने के लिये यह वर्षा जब आंखों की बरसती है तो वह आने वाला होता है। दुनियां के लिये तो बहुत वर्षा बरसती है, क्यों साहब ! यह तो तजरबा सब लोगों को है ना। अरे भई प्रभु के लिये कितने लोग हैं जिनकी वर्षा हो रही है आंखों की, याद से दिल भर आता हो, आंखें डुब-डुबा आती हों, ख्याल से सिर से पांव तक अकुलाहट पैदा हो जाती है। कितने लोग हैं जो इस रंग में रंगे गये। ऐसों की सोहबत में तुम्हें भी उसका थोड़ा Infection (छूत) मिल जायेगा। इसलिये सत्संग को कहा है। उनकी सोहबत करो जो प्रभु के रंग में रंगे पड़े हैं। कई लोग कहते हैं यहां पर (आश्रम में) भजन बनता है, फिर नहीं बनता। भई जाकर ऐसों की सोहबत करते हो जो दुनियां में रंगे पड़े हैं। जो बिजली, आपको

Charging मिलती है, वह Earth हो जाती है। एक भाई सवाल कर रहा था परसों कि यहां तो बनता है भजन, बड़ा आनंद है, यह फिर ज़ायल (नष्ट) हो जाता है। अरे भई दूसरों से Earth हो जाती है तुम्हारी बिजली, क्या किया जाये। Charging तो मिलती है, बड़ी, Free (मुफ्त) मगर वह दूसरों के Contact (सम्पर्क) में जाकर खत्म हो जाती है। तो इलाज यह है कि लगातार उसकी याद बनी रहे, दुनियां की याद न आये। देखो कितनी बढ़ती है। महापुरूष मुफ्त इस मण्डल में Charging का मुफ्त खुराक मिलती है और हम उसको सम्भालते नहीं, और क्या है ! तुलसी साहब यही कह रहे हैं —

पीया दरस बिना दीदार दरद दुख भरो। बिना सत्गुरू के धृग लीवन संसारी ॥

कहते हैं बगैर सत्स्वरूप हस्ती के हमारे जीवन पर हज़ार-हज़ार बार लानत है। मनुष्य जीवन मिला था भागों से, प्रभु को पाने के लिये, उसकी लगन दिल में समानी थी, दुनियाँ को दिल दिमाग से निकालने के लिये, उसका इलाज एक ऐसी हस्ती है जो उसका स्वरूप बन गया है, जो Overflow कर रहा है, उसकी जाते हक का।

तो मनुष्य जीवन पाकर अगर सत्स्वरूप हस्ती नहीं मिली तो जीवन बरबाद चला गया। समझे। उसके (महापुरूष के) मण्डल में Charging है, खुराक मिलती है, यह आलिमों (विद्वानों) से नहीं मिलेगी याद रखो।

तो कहते हैं, बगैर सत्स्वरूप हस्ती के, अगर मनुष्य जीवन भागों से मिला भी है, और वह (गुरू) नहीं मिला तो जन्म बरबाद चला गया। क्योंकि इन्द्रियों के घाट पर रहे। वह क्या सिखलाता है ? इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ। उनकी तालीम यहां से शुरू होती है। Where the world's philosophies end there the religion starts. जहां दुनियां के फिलसफे खत्म हो जाते हैं वहां पर उनकी क, ख, शुरू होती है। कैसे ऊपर आयें ? वह (महापुरूष) Way-up करता है, पहले दिन सबक देता है। यह चीज कहां से मिलेगी ? ग्रन्थों पोथियों के पढ़ने से नहीं। ग्रन्थों पोथियों में इस बात का जिकर है। मगर जब तक ऐसी हस्ती न मिले तुम्हें Way-up नहीं होगा। चलना कहां नसीब होगा ? इसमें दर्वाजा ऊपर खुला है, ऊपर की तरफ, वह पता ही नहीं। तो महापुरूष Way-up करें, दरवाजा खुल जाता है। जब खुल जाता है दरवाजा तो —

''गुरूमुख आवे जाय निशंक।''

तो तुलसी साहब बड़े प्यार से कह रहे हैं।

बिना सत्गुरू के धृग जीवन संसारी।

गुरूसिख बनना चाहिये। बड़ी मोटी बात। सिख तो सारा जहान ही है। अनुभवी पुरूष के

चरणों में नहीं गया, गुरू सिख नहीं बने, तो फिर बुद्धि और फैलायेगी। यही बुद्धि याद रखो, बुद्धि सुबुद्धि रहे तब तो ठीक, अगर कुमति, कुबुद्धि बन जाये ! बुद्धि के बदलने में और दूध के बिगड़े में कोई देर नहीं लगती है। तो महापुरूषों ने यह प्रार्थना की है। मौलाना रूम साहब कहते हैं, हे सत्गुरू ! हे मुर्शिद !

ईं खिरदे बेगाना रा दर कार कश।

मेरी बुद्धि जो मुझको गुमराही देने वाली है इस पर अपना कब्जा रख। यह गुरू का फायदा है, बार-बार मिलने का फायदा है। उसके Direct Contact (सम्पर्क) में रहने का फायदा है। थोड़ी सी दुर्मति आई उसको Direction, और दूसरा As you think so you become. उसकी सुमति है, तुम्हें बिगड़ने नहीं देगी। जब तक वह नहीं मिली Direct touch में रहो, फिर भी संवरने का इमकान है, मैं आपको अर्ज करूं। आपको डायरियां क्यों कहा जाता है रखने को। उसका और कोई मतलब नहीं। तुम Contact में रहो। किसी तरह से तुम्हारी जो गिरावटें हैं उसकी तरफ नजर होगी, जो रस्ते में रूकावटें हैं। हम कहते हैं, जो लोग इतना प्रभु की याद के लिये दुखी हैं, हम नहीं होते, यही सवाल है ना हम लोगों की ? उसका जवाब यही है।

कहते हैं अगर मनुष्य जीवन पाकर आपको कोई सत्स्वरूप हस्ती नहीं मिली, कोई Director नहीं मिला — हममें बड़ी भारी कमजोरियां हैं। हमको, जिनसे तो फैज मिला है, उसकी तो तारीफ़ करेंगे, जिससे दुख मिला है, उनको मारने को फिरेंगे। क्राईस्ट से पूछा क्या करना चाहिये ? कहने लगे — Love thy neighbour as thyself. अपने पड़ोसी से ऐसा प्यार करो जैसा तुम अपने आपके साथ करते हो। कहते हैं, दुश्मनों के लिये क्या करें ? कहते हैं — Love thy enemies. जो तुम्हारा बुरा करता है, उससे भी प्यार करो। उसका बुरा चितवन नहीं करो। यह अवस्था बने। देखो यह दशा हमारी बनी है ? यह है निशानी तरक्की की।

तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि अगर मनुष्य जीवन पाकर सत्स्वरूप हस्ती नहीं मिली, हम उसके, प्रभु के पाने के बगैर दुखी हैं, वह दुखी ही रहेंगे, जीवन बर्बाद चला जायेगा। तो मनुष्य जीवन पाने का सबसे बड़ा आदर्श क्या है ? सब महापुरूषों ने यही बयान किया है कि मनुष्य जीवन में ही जीवन के राज को हल कर सकते हैं, और किसी में नहीं।

धृग धृग खाया धृग धृग सोया, धृग धृग कापड़ अंग चढ़ाया।
धृग सरीर कुटम्ब सहित स्यों, जित हुण खसम न पाया।
खसम न चीन्हे बावरी क्या करता बड़ाई। बातन भक्ति न होइये छांड़ो चतुराई।

भई परापत मानुख देह हुरिया। गोबिंद मिलन की एह तेरी बिरिया ॥
अवर काज तेरे किते न काम। मिल साध संगत भज केवल नाम ॥

सौ सयाने एक ही मत। तो इसको पाने के लिये जब तक लगन न बने — लगन कैसे बने, उसका जवाब दिया गया है। तो मनुष्य जीवन को पाकर अगर सत्स्वरूप हस्ती नहीं मिली, जीवन बर्बाद चला गया।

क्या जन्म लिया जग माहि मूल नहीं जाना। पूर्ण पद को छांड किया जुल्माना ॥

कहते हैं मनुष्य जीवन किस लिये दिया था ? पूर्ण पद पाने के लिये ! उसके पाने की तरफ तवज्जों नहीं, बड़ा भारी जुल्म तुमने अपने आप पर कर किया मनुष्य जीवन पाकर। यही एक मुसलमान फ़कीर कहते हैं —

हरचे मा करदेम बरख़ुद हेच नाबीना न करद।

कि जो कुछ हमने अपने आपके साथ मनुष्य जीवन पाकर जुल्म किया, किसी अन्धे से अन्धे इन्सान ने भी नहीं किया है। वह क्या ?

गुम करदेम दरीं खाना साहबे ख़ाना रा ॥

कि इस घर में इस घर के मालिक को भूल गये, जिसम का रूप बन गये। हमारे हजूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) फ़र्माया करते थे कि जो मनुष्य जीवन पाकर प्रभु की याद करते हैं, अपनी रूचि उधर बढ़ाते हैं, वह अपना जन्म सफल करते हैं। जो इन्द्रियों के भोगों रसों में जाते हैं, वह अपनी गर्दन अपनी छुरी से काट रहे हैं। बात तो वही कह रहे हैं। तो तुलसी साहब कहते हैं कि पूर्ण पद पाने के लिये मनुष्य जीवन मिला था मगर अफ़सोस यह अपना परम पद नहीं सम्भाल रहा। वक्त गुजरा जा रहा है।

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे एहला जन्म गंवाया

मौलाना रूम साहब क्या कहते हैं ? अरे भई गली गली, शहर शहर फिर, और ढूंढ किसी महापुरूष को, जन्म गुजरा जा रहा है। जितना गुज़र गया व्यर्थ चला गया है। गुरू नानक साहब कहते हैं एक शहर के बाहर जा बैठे। एक आदमी को भेजा कि जाओ सच और झूठ खरीद लाओ। गये। कईयों ने कहा सालिस राय यहां पर एक जौहरी है। उसके पास गये। तो वह बड़े बूढ़े थे। पूछा सच और झूठ खरीदना है। कहा, बैठ जाओ। पूछने लगे कि आपकी उम्र कितनी है ? कहते हैं, मेरी उम्र दस साल है ! थे अस्सी साल के बूढ़े। कहने लगे भाई अच्छा झूठ और सच्च खरीदने लगे हो। कहने लगे भई सच्ची बात यह है कि हमें दस साल हुये महापुरूष मिले। पहला जीवन बर्बाद चला गया। सच्ची बात तो यही है। जब तक

अनुभवी पुरूष न मिले, जीवन जो गया वह ज़ाया (व्यर्थ) गया। वह हिसाब में नहीं। तो मनुष्य जीवन पाकर किसी समाज में रहो, यहां समाजों का कोई झगड़ा नहीं। जिसने जिन्दगी के राज़ को हल किया उसकी सोहबत हासिल करो। बस। जितना Highest वह है उतने तुम बनोगे। पूर्ण से पूर्ण बनोगे, अधूरे से अधूरे बनोगे। मगर मोटी निशानी उसकी क्या है ? कि वह तुमको तालीम पराविद्या की देगा।

जुग-जुग में जीवन मरन आज नर देही। सुख सम्पत्ति से पार पुरूष नहीं सेई॥

याने जुगों जुगों से जन्मों में फिर फिर कर अब आपको नर देही मिली इसमें दुनियां के सुखों और सम्पत्ति में ही ग़लतान हो गये। उस प्रभु को पाना था, उस तरफ तवज्जो ही नहीं रही, बड़े भागों से मनुष्य जीवन मिला था, मगर सुख, सुख सम्पत्ति में ही, बाहर इन्द्रियों के भोगों रसों में, बाहिरी जायदादों में, बाहरी Attachments में, जीवन बर्बाद कर रहे हैं। अनुभवी पुरूष मिलता है तो वह क्या कहता है ? अरे भाई यह मनुष्य जीवन भागों से मिलता है। इसमें सबसे बड़ा काम जो आपने करना है, अपनी आत्मा को प्रभु से जोड़ना है। समझे ! फर्माते हैं —

कई जन्म से बिछड़े थे माधो, यह जन्म तुम्हारे लेखे।

सिरो सिर (सिर धड़ की) बाजी लगाओ। मनुष्य जीवन हाथ से निकल गया, फिर या नसीब कब मनुष्य जीवन मिले, फिर तुम यह काम कर सको। सवाल तो यह है। मिला था चौरासी लाख जिया जून के बाद, मनुष्य जीवन उस प्रभु के पाने के लिए था। यह दुनियां के इन्द्रियों के भोगों रसों में ही गुज़ार रहा है। क्योंकि कोई Direction देने वाला नहीं मिला। वही मिले जो आगे ही बह रहे थे। जो बह रहे थे तुमको कहा आओ भई आओ गले लगो। फ़ैलाव में जाना बड़ा आसान है। Invert होना, अन्तर्मुख होना यही बात मुश्किल है।

पढ़ना लिखना चातुरी यह तो बात सहल।

पढ़ना लिखना, चातुरी की बातें बनाना, कहते हैं यह बड़ा आसान है। क्या मुश्किल है —

काम दहण, मन वशीकरन, गगन चढ़न, यही बात मुश्किल।

'काम दहन' समझे ! मन बसीकरन, और गगन चढ़न, यही बात मुश्किल है। यही चीजें रूकावटें हैं। काम और मन गगन पर चढ़ नहीं सकते, यही मुश्किल है। पढ़ना, बातें बनाना, लेक्चर देना, शकलें बनाना, Acting, Posing करना, बड़ा-बड़ा करना, लाओ भई यह कर लो, लूट लो, यह कर लो, यह कोई भी कर सकता है। बड़ी आसान बात है। समझे ! अनुभवी पुरूष तुमको इधर तवज्जो दिलाता है, भई जहां दुनियां के काम करते हो, यह काम निहायत जरूरी है। यह भी करो। वह यह नहीं कहता कि घर बार छोड़ो, जंगलों की राह लो।

मगर वह कहते हैं, अगर मनुष्य जीवन में यह काम नहीं किया, सारे काम किये, तुम्हारा जन्म व्यर्थ चला गया।

पौड़ी छुटकी फिरे हाथ न आवे। एहला जन्म गंवाया ॥

यह गुरू अर्जन साहब कहते हैं।

''जग में रहना दिन चार बहुर मरना री''

कि भई यहां तो चार दिनों का लेखा है —

यह दुनियां दिन चार धिहाड़े।

यह कबीर साहब कहते हैं। यही तुलसी साहब कहते हैं। समझे ! चार दिनों का रहना है, फिर जाना है। अरे भई हमें जाना ही भूल गया। जिसको जाना भूल गया —

दात प्यारी बिसरिया दातारा। जाने नाहीं मन बिचारा ॥

दातें तो प्यारी हो गईं, दातार भूल गया, मौत याद नहीं रही। अगर हमें मौत याद हो जाये, मरना सच और जीना झूठ हो जाये, यही पता लग जाये, हमारा रहना सहना बदल जाये, एक महापुरूष कहते हैं कि तुम आज के दिन को ऐसा जानो कि आज तुम्हारा आखिरी दिन इस दुनियां में है। Last day of life on earth. क्या करोगे आज के दिन आप बताओ ? बदलेगा कि नहीं जीवन ! झूठ फरेब, दगाबाजी, रियाकारी, बनना, बनाना, Acting Posing सब खत्म हो जायेगा। देखता है मेरी मिट्टी पलीत हो रही है। हमारे अन्तर जो संस्कार होते हैं ना वैसे उसका रंग रूप बन जाता है। जो Yogic Eye (योग दृष्टि) रखता है, वह देख लेता है कि इसमें क्या है। हमारे हजूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) फर्माया करते थे कि जब कोई आदमी आता है तो ऐसे मालूम होता है जैसे शीशे की बोतल में अचार है या मुरब्बा। जिसकी आंख खुली है वह देख लेता है। मगर वह परदापोश होते हैं। उसको धोना चाहता है। मुआफ करना यह अगर पर्दादारी का सवाल न हो तो सन्तों के दरबार में एक न फटके ! वहां पापी से पापी भी आते हैं। वह सबको धोने का यत्न करते हैं। वही पापी फिर महात्मा बन जाता है।

धोबी के घाट पर कभी सफेद कपड़े नहीं जाते हैं। हमेशा मैले ही कपड़े जाते हैं। तो सन्तों के दरबार में डाकू, चोर, यह, वह सब आते हैं। वह यह नहीं देखता। वह देखता है यह, आत्मा, उस प्रभु की अंश है। यह बहता जा रहा है। अपने आपको बुरा भी कहलवा लेते हैं, फिर भी उसकी बेहतरी चाहते हैं। जो प्यार एक सत्स्वरूप हस्ती का हमारी आत्मा से है, किसी और दोस्त या मित्र का नहीं है। वह हमारी आत्मा का चाहने वाला है, आत्मा की उन्नति चाहने वाला है। हम लोग अपनी गर्ज़ों के चाहने वाले हैं। मान लो बड़े सदाचारी भी हो

जायें, हद अन्त समय तक। तुम धिड़कते मर जाओगे, सब दोस्त, यार, सम्बन्धी खड़े देखते रह जायेंगे। जिन्दगी के राज़ को हल नहीं किया।

गुरूमुख आवे जाय निसंक।

जिन्दगी एक Continuous है। कपड़ा एक उतारा, आगे हो गये। एक मकान से निकले, आगे एक नई दुनियां में आ गये। बात तो यही है। मगर जिन्होंने यह मुईम्मा (पहेली) हल नहीं किया, वह रोते आते हैं, रोते ही रहते हैं, और मरते भी रोते चले जाते हैं।

तो महापुरूष कहते हैं कि जिन्दगी के राज़ को हल करो भई। बैठो किसी अनुभवी पुरूष के पास, तुम्हारा जीवन सफल हो जायेगा।

जग में रहना दिन चार, बहुर मरना री। बिना सत्गुरू के धृग जीवन संसारो॥

कि बगैर सत्स्वरूप हस्ती के हमारी जिन्दगी जो है, मनुष्य जीवन पाना धृग है, हजार बार लानत है। मनुष्य जीवन भी मिला और जिन्दगी का राज़ हल न हुआ तो फिर क्या फायदा ! फिर चक्कर खाता रहेगा। आना जाना बना रहेगा। ''स्वर्ग नरक फिर फिर औतार'' तो महापुरूष क्या कहते हैं —

यह दुनियां दिन चार धिहाड़े रहो अलख लौ लाई

इन्द्रियों के घाट के ऊपर आओ। ऊपर मुंह करो, वहां लौं को लगाओ। उस महारस को पा जाओ। यह रस अपने आप दिल से उतर जायेंगे।

जब ओह रस आवा, एह रस नहीं भावा।

कहते हैं जिसको मनुष्य जीवन पाकर कोई सत्स्वरूप हस्ती नहीं मिली, उसके मनुष्य जीवन पाने पर हजार बार लानत है। किनकी बाणी है ? तुलसी साहब की !

यह नर तन दुर्लभ मांहि हाय नहीं लाई।

कहते हैं दुर्लभ मनुष्य जीवन मिला था, प्रभु का प्यार, लगन, तड़प नहीं बनी, तो किस काम का ? दुनियां की तड़प बनी रही, उसी का नतीज़ा है हम बार बार आ रहे हैं दुनियाँ में। अगर हमारे अन्तर प्रभु की हाय (लगन) लग जाती तो फिर मरकर कहां जाते ? उसकी गोद में। यहां क्यों आते ?

जाले अंखियों में पड़े कर्म दुखदाई।

कर्म करके क्या नतीजा ? फैलाव में चले गये। आंखों में, अन्तर की आंख पर, जाले पड़ गये। अन्धा बन गया। यह अन्धे की कोई नई बात नहीं। सब महापुरूषों ने यह कहा। कबीर

साहब को कहा, महाराज आप समझाइये इनको। कहते हैं —

यह जग अन्धा।

सारा जगत ही अन्धा है। कहा किसी को तो समझाओ। तो फर्माते हैं —

इक दो होयें उन्हें समझाऊं।

एक दो हों तो उन्हें समझाऊं। किस-किस को समझाऊं ? जिधर देखो सबकी आंखें बन्द हैं।

अन्धे से न आखियन जिन मुख लोईन नांहि। अन्धे से ही नानका जे खसमों कुथे जाहिं॥

जिनकी अन्तर की आंख नहीं खुली, जिस से वह नज़र आता है। दिव्य चक्षु नहीं खुली, शिव नेत्र नहीं खुली, Third Eye नहीं खुली, वह अन्धे हैं। यह स्वामी जी महाराज ने फर्माया है।

गुरू कहें जगत सब अन्धा।

बड़े साफ़ लफ्ज़ हैं। कहते हैं क्यों अन्धे हैं ?

कोई गहे न घट की सन्धा।

अन्दर रस्ता है जाने को, उस तरफ़ को। नज़र ही नहीं आता।

अन्धे दर की ख़बर न पाई।

ऐ अन्धे इन्सान ! तुझे उस दर का पता नहीं जो प्रभु को जाता है। पिण्ड अण्ड ब्रह्मण्ड के पार जाता है। उसकी तुझे खबर नहीं। यही क्राइस्ट ने कहा है। सौ सयाने एक ही मत। Strait is the way. बड़ा तंग तार रस्ता है, जो प्रभु के देश को जाता है। To the house of our Father कहते हैं, बड़ी लोगों ने कोशिश की उस दर को पाने के लिये, मगर पा नहीं सके। महापुरूष पहले दिन तुमको दर में बैठाकर Way-up करता है। आंख खुल जाती है। उसकी बड़ाई है कि नहीं ? अगर किसी महापुरूष की बड़ाई है तो इसी बात में। जो तुमको यह Experience यह पूंजी दे सकता है, लेक्चर तथा ज्ञान तो कोई भाई भी कर सकता है। ग्रन्थाकार भी बन सकता है। चातुरी की बातें भी बना सकता है। Acting Posing भी कर सकता है। मगर यह चीज़ नहीं।

परदा दूर करे आंखन का निज दर्शन दिखलावे। साधो सो सत्गुरू मोहे भावे॥

बड़े साफ़ लफ्ज़ हैं। जब तक यह न मिले काम कैसे बने ? सारे महापुरूष पेश करते हैं। इन्सान अन्धाधुन्ध बहा चला जाता है। अगर किसी जागते पुरूष से ताल्लुक रहे, फिर उससे

ताल्लुक बनाये रखे तब जो आज कुछ समझेगा, कुछ कल समझेगा, कुछ परसों। आंख खुलेगी, कुछ Contact मिला है, उसकी कमाई करेगा, कहना माने तो उसका एक ही जन्म में बेड़ा पार हो सकता है। चारों अवस्था एक ही जन्म में भुगत सकती है।

एक जन्म गुरू भक्ति कर जन्म दूसरे नाम।

गुरू भक्ति के बगैर जागेगा नहीं, Receptive होने के बगैर। जिसकी आंख खुली है उसकी सोहबत और Direction. के बगैर आपका कुछ काम नहीं बन सकता। Way-up नहीं हो सकते हो, पूंजी नहीं मिल सकती। जब पून्जी ही नहीं तो बढ़ाओगे क्या ? एक आदमी आता है लेक्चर देता है कि Business के असूल यह हैं। बड़ी अच्छी तकरीर कर जाये, जिनको लेक्चर दे उनके पास बिचारों के पैसा ही न हो तो फिर आपका लेक्चर ही क्या करेगा ? थोड़ी पून्जी दे दे, थोड़ा Experience दे, फिर दिनों-दिन बढ़ाओ। अगर कमी है तो इस बात की। मैंने अभी अर्ज़ किया था, लोग पूछते हैं कि हमारे अन्तर प्रभु के पाने की लगन क्यों नहीं ? लगन, तड़प क्यों नहीं बनती ? उसका जवाब है। यह फिर अगर महापुरूष के मिलने से उसके साथ Direct ताल्लुक रहे, अपने मन को बीच में दखल न दे, दिनों दिन तरक्की करके एक ही जन्म में जा सकता है। मगर इतना ही मानता है गुरू का कहना जितना अपना मन माने, Amendment सोचता रहता है। बस इतना ही काफी है Self-satisfaction के लिये। ज्यादा करने की जरूरत नहीं। ऐसी बातें सोचता रहता है —

बीस बिसवे गुरू का मन माने। तो परमेश्वर की गति जाने॥

बात तो यही है।

पिया हैं हर दम हिया मांहि परख नहीं पाई

कहते हैं जिसको पाना है, वह आगे ही यहां मौजूद है तुम्हारे अन्तर। सिर्फ परख नहीं है। बाहरमुखी फैलाव में है। जब सत्स्वरूप हस्ती मिलती है, तुमको उसकी परख दे देता है। थोड़ा Contact दे देता है। किसी महात्मा की निशानी यही है। समझे !

सोही सन्त सुजाना हो।

तो फर्माते हैं —

बिना सतगुरू कहो कौन कहे दर्शाई।

कि कहो तो सही कोई आदमी ऐसा भी मिला है जो कहे, बगैर सतगुरू के उसने इस हकीकत को पाया है बताओ। गुरू अमरदास जी साहब फर्माते हैं —

धुर खसमें का हुकम भया, बिन सत्गुरू चेतिया न जाये ॥

यह Fundamental Law बुनियादी असूल है —

बिन गुरू पूरे कोई न पावे लख कोटी जे कर्म कमावे ।

बड़े साफ लफ्ज़ हैं। यही तुलसी साहब कह रहे हैं।

राम कृष्ण ते को बड़ो तिन भी तो गुरू कीन्ह । तीन लोक के नायका गुरू आगे आधीन ॥

उसका कारण क्या है ? आपको पता है ? कि इन्सान का उस्ताद इन्सान। समझे ! पुरातन महात्माओं की बाणियां हमें मदद दे रही हैं, इस बात के समझने के लिये। जब तक अब कोई महात्मा न मिले जो हम को इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर पून्जी दे सके, काम नहीं बनता। Past Gurus are also needed पुराने महात्माओं की भी जरूरत है। उनकी बाणियां नहीं होती तो हम क्या सबूत पेश करते ? स्वामी जी ने कहा ना, मैंने ही यह नहीं कहा। कहते हैं कि जिसको गवाही चाहिए तो तुलसी साहब की बाणी देखे, गुरूबाणी देखे, फलाने की बाणी देखे, कबीर साहब की बाणी देखे, गवाही के लिये पेश कर रहे हैं कि मैं जो कह रहा हूं वह भी कह रहे थे। कोई नई तालीम नहीं। अब भी कोई महात्मा कहेगा कि शहादत चाहिये तो देखो उनकी बाणियां। और क्या कहेगा ? यह शहादत के लिये हैं। अब इस वक्त जब तक कोई हमें जिन्दा पुरूष, जो इसका आमिल है, वह न मिले, Way-up न करे (रस्ता न खोले) काम नहीं बनेगा। Acting Posing (स्वांग रचना करने) वालों का काम नहीं। दुनियां में बड़ा Acting Posing हो रहा है। यही कारण है कि साधुओं सन्तों का नाम बदनाम हो रहा है। और बात क्या है ? जिसको थोड़ा सा मिलता है वह उसी पर नाच उठता है। चलो एक मठ बना लो।

पिया हैं हर दम हिय मांहि परख नहीं पाई। बिना सत्गुरू कहो कौन कहे दर्शाई ॥

कहो तो सही, कोई पेश करे।

खोजत रही री दिन रात ढूंढ कर हारी।

कहते हैं मैं तो दिन रात तलाश करती रही, हार गई तलाश कर-करके। किस बात के लिये ? आगे कहेंगे।

बिना सत्गुरू के धृग जीवन संसारी।

कि सत्गुरू के बगैर यह चीज़ न मिली, मनुष्य जीवन पाकर अगर सत्स्वरूप हस्ती नहीं मिली तो हमारा जीवन बरबाद, हजार बार लानत है। सारे महापुरूष यही कह रहे हैं। स्वामी जी महाराज ने फर्माया कि मैं बड़े-बड़े घाटों पर गई —

चुनर मेरी मैली भई मैं का पे जाऊँ धुलान।

कि मेरी जिसम रूपी चुनरिया मैली हो गई, मैं किससे धुलाऊं ? बड़े-बड़े घाटों पर गई, पर —

कोई धुबिया मिला न सुजान।

कोई ऐसा धोबी न मिला जो इन मैलों को धो दे, इन्द्रियों के घाट से ऊपर ले आये। कहते हैं आखिर एक सखी ने कहा कि भई सत्गुरू दुनियाँ में आये हैं। कहते हैं, तलाश के बगैर नहीं मिलता। ''जोयन्दा याबन्दा'' (जो तलाश करता है उसे मिलेगा) याद रखो, जिसके दिल में सच्ची तड़प है, वह प्रभु देखता है बच्चा मुझे तलाश कर रहा है, वह क्या करता है ? किसी मिले हुए को मिला देता है। वह (अनुभवी महापुरूष) क्या करता है ?

कोई जन हरि स्यों देवे जोड़।

उसको जोड़ देता है। बस। हमें दुनियां के लिये तलाश रहती है ना ! कोई काम हो, फलाना काम बन जाये, एक से पूछ, दूसरे से पूछ, तीसरे से पूछ, अगर हमें प्रभु के मिलने की ख़ाहिश हो तो हम किसी से नहीं पूछेंगे। कहते हैं जब तक सत्स्वरूप हस्ती न मिले, काम नहीं बनता।

सत्संग लाग रहो रे भाई। तेरी बिगड़ी बात बन जाई॥

ऐसे पुरूषों की संगत का नाम सत्संग है। जो हालत हमने बिगाड़ रखी है, क्या ? आत्मा के मन इन्द्रियों के घाट पर फैलाव के कारण बाहरी दुनियां हम से बस रही है। इसमें हम बार-बार आ रहे हैं। इससे Invert करना, इससे, पिण्ड से, ऊपर आने का काम, कोई सत्स्वरूप हस्ती का है। यह काम न आलिकों से होगा, न फ़ाज़िलों से, न ग्रान्थाकारों से, न किसी और से —

अरी यह मट्टी तन साज समझ बिनसेगा।

कि यह तन मिट्टी का बना है, आखर बिनसेगा। कब तक रहेगा ? होश में आ, क्या कर रहा है।

छिन में छूटे बदन काल गिरसेगा।

आखर छोड़ना पड़ेगा। काल का मंगेवा इससे हुआ है। वह इसको ले जायेगा। बस।

काल कुंवारी काया।

यह जिसम तुम नहीं। तुम्हें जिसम दिया गया है, बड़ें भागों से और ऊँचा समय मिला है।

यह तो समय मिला अति सुन्दर।

इससे काम लो। मगर यह तुम नहीं। यह कुछ रोज के लिए मिला है। Make the best

use of this. इससे फ़ायदा उठाओ। इस भूल में न रहना कि यह हमेशा रहेगा। यही भूल है जो हमको दुनियां में फंसा रही है।

एह शरीर मूल है माया।

इसी शरीर ही से भूल की बुनियाद शुरू होती है। हम तन-धारी थे, तन का रूप बन गये हैं। बस।

साधो यह तन मिथ्या जानो। या भीतर जो राम बसत है साचा ताहि पछानो।

बड़ी साफगाई है। खोल खोलकर पेश करते हैं।

आसा बन्धन जग रोज जन्म धरना री।

दुनियां की ख्वाहिशात (इच्छायें) उनमें बन्धा हुआ इन्सान बार-बार —

जहां आसा तहां बासा।

आना पड़ता है। दुनियां में बार-बार आने का कारण क्या है ? यहां की मोहब्बत, यहां की Attachment. गुरू अर्जन साहब ने फर्माया है —

नदरी आवे तासों मोह। इब क्यों मिलिये प्रभु अविनाशी तोह॥

कि हे प्रभु ! जो कुछ हमको नजर आ रहा है, उससे हमारा मोह बना पड़ा है। कहते हैं जो नाशवान चीज़ों में रूह लग रही है, तू अविनाशी पुरूष है, तुझे कैसे पा सकती है ?

यह दुख सुख बेड़ी बिखम भोग करना री।

जैसा कर्म बीजोगे वैसा भोगोगे। प्रारब्ध कर्मों के अनुसार दुख और सुख आते हैं, इसमें बन्धा इन्सान बार-बार फिर और ज़हर खाता है। हमारे हज़ूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) फर्माया करते थे कि इन्सान ज़हर खाता है। उसके अन्तर दर्द और कड़वल पड़ते हैं। अरे भई हाय-हाय भी करता है और ज़हर खाता चला जाता है। आगे का तो इलाज हो जायेगा, और खाने का क्या है ? कहीं तो खड़े हो जाओ।

भुगते चौरासी खान जुगन जुग चारी।

चारों जुग गुज़र गये, टक्करें मारते रहे, घर नहीं पहुंचे, खानों में चक्कर खाते रहे।

जहां आसा तहाँ बासा।

मनुष्य जीवन शायद कई बार आगे भी मिला हो, मगर यह काम न करने के सबब से फिर चक्कर खाये। यह हालत है हमारी।

बिन सत्गुर के धृग जीवन संसारी।

कहते हैं बगैर सत्स्वरूप हस्ती के हमारे संसार में आने पर हज़ार बार लानत है। अरे भई सत्गुरू किसको कहते हैं ? सवाल तो यह है। सत्गुरू वह हस्ती है, इन्सानी शकल रखता है हमारी ही तरह। उसके अन्दर वह परमात्मा प्रगट हो गया है। बात तो यह है।

हमरो भरता बड़ो विवेकी आपे सन्त कहावे।

हमार भरता बड़ा विवेकवान है, जिसके अन्दर वह प्रगट हो जाता है, उसको सन्त कहते हैं। सन्त क्या करता है ?

सन्त संग अन्तर प्रभु डीठा।

जो उसके पास आते हैं, वह भी देखने वाले बन जाते हैं। किन आँखों से ?

नानक से अंखड़ियां बेअन्न जिन डिसन्डो मापिरी। सत्गुरू मिले तां अखी वेखे।

बड़े साफ़ लफ्ज़ हैं।

घर में घर दिखलाय दे सो सत्गुरू पुरख सुजान।

जो बतला दे Theory (सिद्धान्त) न समझाये, बतला दे, Way-up by self-analysis (पिण्ड से ऊपर लाकर) Make you rise above the body-consciousness, जो जड़ चेतन को अलेहदा करके अनुभव की पूंजी दे सके, उसका नाम सत्गुरू है। न आलिमों का नाम साधु सन्त है, न फ़ाज़िलों का, न ग्रन्थाकारों का, न एक का न दूसरे का। आज जो Gurudom बदनाम है, वह इसीलिये हो रहा है। ऐसी हस्तियाँ आगे भी कामयाब (दुर्लभ) थीं, अब भी कामयाब हैं। मैं तो यही अर्ज करूंगा, अगर सचमुच अनुभवी पुरूष जितने हैं, मिल क्यों नहीं बैठते ? बड़ी मोटी बात। न मिल बैठने का कारण आप समझते हैं ? चार शराबी तो बैठते हैं, चार प्रभु भक्त क्यों नहीं मिल बैठते, कुछ ज़ोम (अकड़) कुछ खुदी कुछ अपने आपको धोखा ! Insincerity. यह कारण है, और क्या है ? जब सब हम एक ही के पुजारी हैं, किसी समाज में भी हैं, आपस में प्यार क्यों न हो ? बड़ी मोटी बात है।

मैंने अर्ज़ किया ना कि सब समाजें अच्छी हैं। सबमें तारीफ है, अपने अपने तरीके से। आखिर उसी एक के सब पुजारी हैं। उसको राम कहो, अल्लाह कहो, खुदा कहो, विस्वम्बर कहो, किसी नाम से याद कर लो। तो फिर आपस में नफरत क्यों है ? अगर समाजों के चलाने वाले भी ठीक प्रचार करें तो दुनियां में प्यार हो जाये। यह पाकिस्तान नहीं बनता। आगे प्रभु जाने कि हिन्दोस्तान बने, खालिस्तान बनेगा, कि कुफ्रिस्तान बनेगा, यह आगे आप देख लो, अगर यही हालत रही दुनियां में तो। कशमशें बढ़ रही हैं, Right (सही) प्रचार न होने के कारण सब दुखी हैं।

सुत मात पिता नर पुरूख जगत का नाता। यह सब सनसम का कोठ, कुटुम्ब दुखदाता ॥

बाल बच्चे, स्त्री और रिश्तेदार, यह वह, कहते हैं यह सब दुनियां में तुम्हारे Attachment (मोह) के कारण, बार-बार लाने के सामान बन रहे हैं। बस। इनको पालो। लेने देने खुशी से खत्म करो। महापुरूष यह नहीं कहते कि न करो। जो देना है, खुशी से दो। बच्चे वही बनते हैं, या स्त्री वही बनती है, जिसने लेना देना हो। और क्यों नहीं बन गये ? जो देने हैं वह खुशी से दो। अपने रस्ते चलो। यह दुनियां चार दिहाड़े है। आखिर सबको जाना है। तेरा दिन ए भई, वह नजदीक आ रहा है, जो सब पर आया है। तू तैयार हो। कब तक गफलत करेगा ? करेगा तो रोयेगा, और क्या है।

टुक जीवन है, माहि काल की बाजी।

यह जो कुछ दुनियां में है, आखिर फना हो जाना है। कोई चीज स्थिर नहीं, रहने वाली नहीं। यह Passing Phase है। इसमें भूलो नहीं भाई, आखिर जाना है।

कूड़ कूड़े नेह लगा बिसरिया कर्तार। किस नाल कीजे दोस्ती सब जग चलण हार ॥

इसमें सत् वस्तु केवल आत्मा और परमात्मा है। अपनी आत्मा को उससे जोड़ लो, आना जाना खत्म हो जायेगा। किसी समाज में रहो, सब समाजें मुबारक हैं।

इन बातों में नहीं परम पुरख है राजी।

भई इस Attachment में कहते हैं वह (प्रभु) राज़ी नहीं। वह प्रभु चाहता है बच्चे मेरे पास आयें। कौन माता और पिता हैं जो चाहेगा बच्चा उसका बाहर मिट्टी उछालता रहे। वह कहते हैं आये, रोटी खाये, आराम से रहे, नहाये धोये।

सूना पड़ा तेरा तख़त और ताज।

पिता तो चाहता है, मेरे बच्चे मेरे पास आयें। पर इन बातों में वह राजी नहीं, वह भी दुखी है।

पिऊ परमार्थ संग साथ सहज तरना री।

परमार्थ को पाकर परम अर्थ को पाकर, वह किस बात में है ? प्रभु से मिलना है। तुम्हारा जन्म सफल हो जाये। अगर यह बात भूल गई, स्त्री, बाल-बच्चे, यह वह, तुम्हारे बन्धन का कारण बन गये। समझे !

शुरू शुरू में मैंने हजूर से सवाल किया था, कोई महीना दो महीना नाम लेने के बाद कि बाहर से हट गये, स्वरूप (गुरू स्वरूप) आया नहीं, क्या करें ? कहने लगे, भाई लोग गायों का, भैंसों का, बच्चों का, स्त्रीयों का, दोस्तों की दिल में याद बसती है उनका ध्यान बसता है, तो क्या साधु का ध्यान भी बुरा है। साधु साधु हो। ध्यान करना बड़ा खतरनाक है। याद

रखो अधूरे का ध्यान करोगे अधूरे बन जाओगे।

तो एक फ़कीर ने कहा, 'धियां धाड़' तरीका अपना है, बड़ा है करख्त जैसा —

धियां धाड़ ते पुतर लोहड़ा ते रन दुखो दा खूह।
इस घाणीं विचों सुथिरिया कोई हरजन कढे कू ॥

इतने Attach हो रहे हैं दुनिया में, दिल दिमाग में दुनियां बस रही है। जिसने लगना है, वह तो दुनियां में लग रहे हैं, इसलिये बार-बार दुनियां में आ रहे हैं। तो मनुष्य जीवन को पाकर परम अर्थ को हासल करो। परम अर्थ किस बात में है ? जो फना (नाश) न हो कभी। दुनियां के अर्थ तो आये और गये। जो नाश से रहित अर्थ है, वह परम अर्थ है। वह प्रभु का पाना है, आत्मा को प्रभु से जोड़ना।

बिन सत्गुरू के धृग जीवन संसारी।

बार-बार कहते हैं। गृहस्त में रहो। अगर सत्गुरू मिल गया तो —

पूरा सत्गुरू भेटिये पूरी होवे जुगत।
हसंदियां, खेलदियां, खवदियां, पहनदियाँ, विच्चे होवें मुक्त ॥

गृहस्त में हो, सत्गुरू मिले, तुम्हारा बेड़ा पार। त्यागी हो, सत्गुरू मिले, तुम्हारा बेड़ा पार। किसी हालत में हो, सत्स्वरूप हस्ती मिल जाये, तुम्हारी जीवन की कल्याण। नहीं तो जीवन बरबाद। बड़ी साफ़गोई से खोल-खोल कर बयान कर हरे हैं। हर एक Phase of life (जीवन के पहलू) को ले रहे हैं।

कोऊ भेंटे दीन दयाल डगर बतलावें। जेही घर आया जीव तहां पहुंचावें ॥

कोई दीनों का बन्धु, दयाल पुरूष मिले जो हमें, जहां से आये हैं फिर वापस पहुंचा दे, वह डगर पर चला दे, दिखा दे — ''घर में घर दिखला दे ''।

किन विधि मिले गुसाईं मेरे राम राय।
कोई ऐसा सन्त सहज सुख दाता, मोहि मारग दये बताई।

पकड़ कर बता दे, दिखा दे, यह रस्ता है, चल भई। लेकचर, कथा, ज्ञान कर के परे न हो जाय। कहते हैं, कोई ऐसा दीन दयाल पुरूष मिल जाये, हमारा बेड़ा पार हो जाये, किसी Phase of Life में रहो, दुकानदार रहो, नौकरी पेशा रहो, ख्वाह त्यागी रहो, या गृहस्त में रहो, जब तक कोई जागता पुरूष नहीं मिलता, जीव की कल्याण नहीं, सच्ची बात है। जंगलों में चले जाओ, वहां क्या है ? वहां भी तो बन्धन है। यहां इन्सानों से हटे, वहां बकरियों और गायों और दरख्तों से मुहब्बत पैदा कर ली। कोई रस्ता बताने वाला मिले, बाहर रहे, एकान्त

से फ़ायदा उठा ले। दुनियां में रहे अगर उसके संयम के मुताबिक चले, दुनियां में रहते हुये कल्याण है।

पूरा सत्गुरू भेटिये पूरी होवे जुगत।

बात तो इतनी है —

जैसे जल में कमल नरालम मुर्गाई नीसाने। सुरत शब्द भवसागर तरिये नानक नाम बखाने॥

दुनियां में रहते हुये भी अतीत रहोगे। अगर तुम्हारी सुरत उस परिपूर्ण परमात्मा से जुड़कर उसका रंग लेती रहेगी तो दुनियां में Attachment नहीं रहेगी। रहते हुये आज़ाद रहोगे। जैसे कमल पानी में और जैसे मुर्गाबी जल में।

दर्शन उन के उर माँहि करें बड़ भागी॥

कहते हैं ऐसे पुरूषों के दर्शन अपने घर के अन्तर धारण करें बड़े भागों वाला कोई इन्सान हो। बाहर तो सारा जहान उनका दर्शन करता है मुआफ करना।

सत्गुरू नूँ वेखदा जेता को संसार।

गुरू नानक साहब को, और और महापुरूषों को लोग कुराहिया भी कहते रहे! देखा तो है। तो क्या हुआ। कहते हैं, उर के अन्तर उनके दर्शन करो, रूचि से, प्यार से। उसके दिल में समाने लग जाओ। कहते हैं, वह बड़े भागों वाले हैं। क्यों ? As you think so you become (जिसका ध्यान करोगे उसका रूप बनोगे)।

गुरू को सिर पर राखते चलते आज्ञा मांहि। कहे कबीर तिस दास को तीन लोक डर नांहि।

गुरू को दिल में बसाता है, अरे वह तुमको अपने दिल में बसाता है। बड़ी मोटी बात। जैसा वह है, वैसे गुण तुममें आने लगेंगे। बस। कहते हैं वह बड़े भागों वाला इन्सान है। हम बच्चों को बसाते हैं।

खुदा वही है भई जो खुद आप आये। जो अपने आप आयेगा अन्तर, वह परमात्मा की पावर उस शकल में इजहार करेगी। वह ठीक है। उसमें धोखा नहीं और उसकी आपको परख दी जाती है — सिमरन। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, कि वह इन्सान बड़े भागों वाला है, जो ऐसे अनुभवी पुरूष को दिल में बसाता है।

दर्शन उनके उर माहि करें बड़ बागी। उनके तरने की नाव किनारे लगी॥

कहते हैं उस नाव पर, जो किनारे पहुंची, उस पर बैठ गये। जो उसमें बैठ गये, पार हो जायेंगे कि नहीं।

जिन तुम भेजे तिन्हीं बुलाये। सुख सेहज सेती घर आवो ॥

वह बेड़ी लेकर, भई किसी ने पार संसार सागर से जाना है ? हौका देता है। लोग उसको कुराहिया कहते हैं।

कहीं वे दाता मिल जायें करें भव पारी।

कि अगर ऐसा दाता मिल जाये फिर भवसागर से पार हो जायें। उसकी बेड़ी पर। उसकी बेड़ी पर सवार हो जायें। बेड़ा पार हो जाये। हम सवार ही नहीं होते। सवार होकर भी फिर छलांगे मारते हैं। बेड़ी चढ़ने से पहले सोच लो भई, जब चढ़ गये तो उसमें बैठो। उसका सन्जम अखत्यार करो, बेड़ा पार हो जाये। अगर तुम छलांग भी भरोगे तो मल्लाह तुम को छोड़ता नहीं, यह याद रखो। फिर भी तुम्हें निकालेगा, डूबने नहीं देगा। पर काहे को छलांगें मारनी है भई, बेड़ी पर हजारों मन लोहा भी तर जाता है। पापी से पापी लोग तर जाते हैं। यह किसके लिये हैं ? जो शरण में जाकर फिर उस दिन से गुरू का हुक्म उसके लिये वेद हो, गुरू का हुक्म बाईबल हो, गुरू का हुक्म कुरान बने, उसके लिये। हम गुरू के हुक्म को हुक्म नहीं मानते। हम उतना ही मानते हैं जितना अपना मन माने। बड़े-बड़े लोगों की यह कैफियत है। और यही कारण है हम को प्राप्ति बहुत कम होती है या होकर भी ज़ायल (नष्ट) हो जाती है।

कहीं वे दाता मिल जायें करें भव पारी। बिन सत्गुरू के धृग जीवन संसारी ॥

कबीर साहब क्या कहते हैं कि अगर नदी से पार जाना है तो मल्लाह से प्यार पैदा करो। समझे। उसके कहने पर चलो।

सत्संग करना मन तोड़ शरण सन्तन की

क्या करो फिर ? सत्संग करो। मन को मारकर सन्तों की सोहबत में बैठो। सन्तों की सोहबत का नाम ही सत्संग है।

जैं सत्गुरू तैं सत्संगत बणाई।

वहां मन माने न माने, बैठो। समझो वह क्या कहता है। मण्डल में Charging होगी, कुछ आज बात समझ आयेगी, कुछ कल आयेगी। करते-करते जाग उठोगे। साथ पून्जी दे देगा। अगर उसको भी साथ कमाई करने लग जाओगे तो क्या रंग चढ़ेगा ! यह न हो कि —

मन दिया कही और ही तन साधु के संग। कहें कबीर कोरो गज़ो कैसे लागे रंग ॥

दिल में उसके वचनों को बसाओ —

जो बचन गुरू पूरे कहयो, सो मैं गाठडी बान्धा।

Let my words abide in you क्राईस्ट कहता है कि मेरे बचन तुम्हारे हृदय में बसें

and you abide in me और तुम मुझमें बसो। बचनों का बसाना तो समझ आ गया। तुम मुझमें कैसे बस सकते हो ?

रखो किसी को दिल में बसो किसी के दिल में।

बस। इस तरह से तुम बस सकते हो। फिर जो मांगोगे मिलेगा। यही कमी है, अगर कमी है तो।

सत्गुरू बचन बचन है सत्गुरू।

गुरू के वचन हैं, वही सत्गुरू हैं। जो बचनों पर मत्था टेकते हैं, उसकी अवश्य ही कल्याण है। जो बाहर नाचते टापते हैं, 'हनोज दिल्ली दूर अस्त' दिखावा, Acting Posing किससे करते हो ? अरे भई उससे जो अन्तर नाम देते साथ हो बैठता है ? समझे !

दिल में हर वक्त उसके पाने की तड़प और शौक बना रहे, हर वक्त देखने को दिल करे। इसीलिये कबीर साहब ने कहा कि गुरू के दर्शन करने चाहिये दिन में कई इक बार। कई एक बार नहीं तो दो बार, दो नहीं तो एक बार, दिन छोड़कर हफ्ते में दो बार, फिर हफ्ते बाद, पन्द्रह दिन बाद, महीने बाद, तीन महीने, छह महीने, छह महीने साल का जिकर करके आखर क्या कहते हैं ? जो साल भर भी उसके अन्तर कभी यह उबाल पैदा नहीं हुआ कि चलकर दर्शन करें, कहते हैं फिर ताल्लुक ढीला पड़ जाता है। समझे। मगर समरथ पुरूष की कहानी कुछ और है। वह कभी नहीं छोड़ता है।

हजूर के पास एक दफ़ा एक साहब गये, अफ़रीका से आये पाँच साल के बाद। मैं भी खड़ा था। कहने लगे, महाराज कबीर साहब ने कहा कि एक साल के बाद सिख का नाता ढीला पड़ जाता है। कहने लगे वह कबीर साहब ने कहा है। मैंने नहीं कहा। तरीका बयान है। समर्थ पुरूष की नज़र पड़ी हुई कही नहीं जायेगा। अरे भई क्यों नहीं अब ही फ़ैसला कर लेते ? उसके वचनों को मानो, बीस बिसवे मानों। प्रत्यक्ष उस गति को देखो जिसको उन्होंने बयान किया। मरकर मिलेगा कि नहीं मिलेगा, इसका क्या भरोसा करते हो ? जीवन मुक्ति को मानो।

मरे हुये जो मुक्त देवोगे तो मुक्त न जाणं कोयला

A bird in hand is worth two in the bush. हाथ में एक परिन्दा अच्छा है। झाड़ियों में सौ हों ! देखो तुम क्या बन जाओ, जो महापुरूषों ने कहा, क्या तुम देख रहे हो ? तो बात ठीक। नहीं देखा, हां जी महात्मा है, हमें बहुत अच्छे महात्मा मिले हैं। भई देखो तुमको क्या मिला है ? वैसी लगन पैदा करो।

अगर ऐसी लगन अन्तर में बन जाये गुरू के लिये। एक जगह बाबा जी महाराज ने हजूर को चिट्ठी लिखी है। वह (हजूर) कहते हैं कि मुझे चैन नहीं है आपके दर्शनों के बगैर, तो कहते हैं जो काम करते हो वह भी पूजा में ही है। यह तड़प भजन के बराबर है। ज़मीन बन गई ना ! जिसकी तड़प बन जाये, उसके बगैर, दुनियां निकल जाती है वहां से। कोई और चीज़ बस नहीं सकती, Ruling Passion बन जाती है, पैदा करके देखो। एक लगन बनेगी, एक नशा आता रहेगा। उसी का बिछौना। बस। बैठते उठते वही तस्वीर आंखों में फिरने लग जायेगी। दिल में बसने लग जायेगी। फिर इतना बन जाओगे तुम उसी का रूप बनने लग जाओगे। 'गुरू गोर अन्दर समाय'।

सेन्ट पाल ने कहा It is I, कि यह मैं हूं। Not now I, कि मैं अब मैं नहीं हूं भई। Christ lives in me. इसी का नाम गुरू भक्ति है। कहते हैं यह क्राईस्ट बैठा मुझमें काम कर रहा है। यही हाफ़िज साहब ने कहा। फर्माते हैं —

चुनां पुरशुद फज़ाये सीना अज़ दोस्त।

मेरे सीने की फ़ज़ा (जगह) उस दोस्त से इतनी भर गई है कि —

ख्याले ख़ेश गुमशुद अज़ ज़मीरम।

यह भूल गया कि यह कौन है, मैं नहीं, अब गुरू ही रह गया है। इसका नाम है गुरू भक्ति। कि यह हाथ उसी का है, यह महसूस कर रहा है। जिसका यह बन गया उसका क्या रह गया ? अब आप बताइये। अगर तुम फ़नाफिलशेख़ हो गये अर्थात् गुरू में समा गये, तुम फ़नाफ़िल्लाह हो गये (प्रभु में समा गये)।

भीख का किस्सा हजूर सुनाया करते थे। एक भीख का तालिब (शिष्य) था। वह, या भीख! या भीख ! किया करता था। तो लोगों ने पूछा शरीयत (समाज धर्म) वालों ने कि तेरा खुदा कौन है ? कहता है भीख ! तेरा मुरशिद (गुरू) कौन ? कहता है, भीख ! कहने लगे, तू बड़ा काफ़र है। सजा दे दी मौत की। बादशाह के पास पेश हुए, क्योंकि मौत की सज़ा वही पास करते थे। देखा मस्त फ़कीर है। अरे भई तेरा मुर्शिद कौन ? कहता है भीख ! तेरा खुदा कौन ? कहता है भीख ! उसने देखा भई खुदमस्त है, छोड़ दो इसको। लोगों ने कहा, महाराज यह भाग जायेगा। कहते हैं कोई फिकर नहीं करो। उस मस्त से कहने लगे भई हमारे मुल्क में बड़ी कहतसाली (अकाल) है। बारिश नहीं हो रही है। तू अगर अपने खुदा को कह कि बारिश कर दे, क्या अच्छा हो ! कहता है अच्छा मैं परसों आऊंगा। लोग कहने लगे महाराज, यह भाग जायेगा। कहने लगे कोई फ़िकर की बात नहीं। जाने दो। बारिश हो गई। तीसरे दिन आये। कहने लगे भई तेरे भीख का बड़ा शुकराना है, बारिश हो गई है। नजराना देने लगे, कोई इक्कीस गांव का पट्टा कि आते जाते

जो लोग हैं, लंगर वगैरा का वहां काम बन जाये। कहने लगा मैं यह फना (नाशवान) चीज़ अपने भीख के पास नहीं ले जाता। तो भई जो फ़नाफिलशेख़ हो गये, वह फ़नाफ़िल्लाह हो गये, सच्ची बात तो यह है। खुसरो साहब को कहा लोगों ने, अरे भई तू बुतों का पूजारी बन गया, तू मुसलमान है, काफ़र हो गया। तो कहने लगे —

ख़ल्क मी गोमद कि ख़ुसरो बुतपरस्ती में कुनद।

दुनियां कहती है कि मैं बुतपरस्त हो गया। कहते हैं हां —

आरे आरे मे कुनम बा ख़ल्को आलम कार नेस्त।

मुझे पता है, मुझे क्या मिल रहा है। अरे भई गुरू के अन्तर वह प्रभु नज़र आता है।

हर जियो नाम परियो राम दास।

हजूर स्वामी जी महाराज फर्माते हैं —

राधास्वामी धरा नर रूप जगत में।

सिख का जिसके लिये वह भाव बन जाता है वही उसका खुदा है। बस ! लोग इसका फिर मत बना लेते हैं। अरे भई मत तो बनाया नहीं किसी महापुरूष ने। हकीकत परम्परा से चली आई है। तरीका बयान अपना रहा है। इसका नाम है गुरू भक्ति।

हर सच्चा गुरू भक्ति पाइये, सैहजे मन वसावणिया।

यह गुरू अमरदास जी साहब फर्माते हैं। सहज ही में, गुरू भक्ति करने से प्रभु मिलता है। मगर गुरू गुरू हो यह याद रखो, नहीं तो काम बिगड़ जायेगा।

सुरत तम मन से साच रहे रस पीती।

कहते हैं सुरत तन और मन करके उसमें वही रंग आता है, उसी रस को पीता रहता है।

माई चरण गुरू मीठे।

बड़े भाग से प्राप्त होते हैं, जन्मों-जन्मों के पुण्य जाग उठते हैं, ऐसे पुरूषों के दर्शन करने से। सारे महापुरूष एक ही बात कहते हैं। यह राज़ किनको दिया जाता है ? जो एक ही जन्म में बेड़ा पार करना चाहते हैं। सच्ची बात तो यही है। किसी समाज में रहो, समाजें सब मुबारक। करना यही होगा।

मौलवी हरगिज न शुद मौलाये रूम। ता गुलामे शम्स तबरेज़ी न शुद॥

मौलवी रूम, मौलाना रूम न बन सका जब तक शम्स तबरेज़ का गुलाम न बना। फिर कहते हैं कि ए मुरशिद ! तू मुझे अपना गुलाम बनाये रख।

गुलामे शम्स तबरेज़ी कलन्दरवार मी गोयम।

बाजू निकालकर कर कहूं कि भई मैं शम्स तबरेज़ का गुलाम हूं भई।

जो गुरू गोपे अपना से नर बुरयारी।

जिससे फैज (परमार्थ लाभ) मिले, उसका नाम छुपाना महापाप है। खुल्लम खुल्ला क्यों नहीं कहते, मुझे एक दौलत मिली है। मेरा गुरू ही कोई नहीं है लोग कहते हैं। अरे भई कहां से दौलत आये। अगर फर्ज करो महात्मा भी आये, आखिर सन्त को सन्त की सोहबत, शराबी को शराबी की सोहबत प्यारी है हमेशा से, इससे कौन इनकार कर सकता है ? कोई पीछे बने चले आते हैं, उनको भी कौन भायेंगे ? जो उस तरफ जाने वाले हैं !

कोई जावे सजण कुफर काल को जीती।

कहते हैं यह काल का, त्रिलोकी सारी, यह सारी पैदायश, काल के हाथ में है।

काले बस किया।

कोई सजण, ऐसा कोई मिल जाये वही जीत कर निकल जाये तो निकल जाये, नहीं तो चक्कर खाता रहेगा। आलिम फाजल, अमीर गरीब, कोई किसी जगह भी हो, जब तक सत्स्वरूप हस्ती न मिले, काम नहीं बनता।

अमृत हर दम कर पान चूवे चौ धारी।

कहते हैं कि तेरे अन्दर कर देने वाली धारा बह रही है, उसको पीयो।

हर दर निदा अज़ आयद बसूये जानो जस।
के ऐ शम्स तबरेज़ी बया दरबार गाहे किबरिया॥

कहते हैं हर घड़ी एक आवाज,अमृत की धारा प्रभु की तरफ से आ रही है मेरे अन्तर में। क्या कहती है ? वापिस आजा मेरे देश में। तू क्यों भटक रहा है।

बिना सत्गुरू के धृग जीवन संसारी।

यह दौलत कहां से मिलती है ? आ तो अब भी रही है यह धारा, मगर उसको ले नहीं सकते। वह (गुरू) अर्न्तमुख करके उससे जोड़ देता है।

सत्संग मार्ग की प्रीत रीत जिन जानी। उन सज्जन पर हूं बार बार कुर्बानी।

कि जिन लोगों को सत्संग की रीत का और प्रीत बन गई, कहते हैं मैं ऐसे लोगों पर कुर्बान हूं बार बार। सत्संग मैंने अभी अर्ज किया था जहां ऐसी सत्स्वरूप हस्ती बैठी हो, उसका नाम सत्संग है।

गुरू पूरे ते सत्संग उपजे।

अनुभवी पुरूष कहते हैं, जो ऐसे सत्संग से प्रेम रखते हैं, हम उन पर बार बार कुर्बान हैं। आपको पता है, गुरू रामदास जी साहब ने क्या कहा ? जिन्होंने गुरू मेरे को देखा, उन पर भी कुर्बान जाऊं। जिन्होंने उसकी चाकरी की, उस पर तो सौ-सौ बार कुर्बान जाऊँ। जिन्होंने मेरे गुरू को एक बार देखा है, कहते हैं उन पर भी मैं कुर्बान जाऊँ। बताओ प्यार है ना। भई हमारा प्यार दुनियां में लगा पड़ा है, सच्ची बात तो यह है। बार-बार दुनियां में आ रहे हैं।

हरि की पूजा सत्गुरू पूजो।

बड़ी साफ बात। हरि को देखा नहीं है, उसकी पूजा करना चाहते हो तो जिसमें वह प्रगट है, उसकी पूजा ही हरि की पूजा है। बात तो यही है।

निस दिन लौ लग रहे रमक रस राती।

उस लौ में, अन्तर नाम ले रहे हो, उसके साथ रसों की गुरू रामदास जी साहब कहते हैं, कि बड़े-बड़े घूँट अमृत रस के अन्तर में आते हैं। जैसे-जैसे महापुरूषों की याद, जैसे-जैसे वह लगन, नशा चढ़ता है — शराबी चार बैठे हों तो कितना नशा चढ़ता है भई ? आंखें टेहक जाती हैं, टेढ़ा सीधा होने लगते हैं। अरे भई प्रभु भक्त क्यों नहीं बैठ सकते ? यही बातें मैंने वहां World Religions Conference में सुनाई, सब कहते थे ठीक है।

भई एक चीज आपको मिली है, पेश करो। छुपाने की क्या बात है ? वहां मैंने जिकर किया कि क्यों मैं आया World Religions Conference में। हजूर का जिकर किया, अपनी Presidential Speech (प्रधानपद के दिये गये अपने भाषण) में हजूर का जिकर किया। जिससे फ़ैज (परमार्थ लाभ) मिले उसका शुकराना न हो ? वह इन्सान खुशकिसमत हैं जिनको अनुभवी पुरूष मिला है। अनुभवी पुरूषों में कोई फरक नहीं। एक ही रंग देते हैं। सच्ची बात।

अगर ऐसे दो अनुभवी पुरूषों के मिलने का रंग, जो देखो उनको मिलते हुये, फिर तुमको नशा चढ़ेगा। क्या होता है ? मुझे देखने का इत्तेफाक हुआ है। हमारे हजूर थे। एक बार महर्षि (शिवब्रत लाल) जी से मिले। लाहोर की बात है। क्या कहना ! महर्षि जी उनके पांव पड़े, वह उनके पांव पड़ें, गले लग कर मिले, मैं बैठा था वहां। तो यह राज़ की बातें हैं। जिनकी आँख खुले, देखें। न खुले तो हाथ जोड़े कि मालिक दया करें, और क्या ! यह सब झगड़े हमारे बनाये हुये हैं, जो मठें बनाना चाहते हैं वह कई बातें बनाया करते हैं। Histories में जो मर्ज़ी है लिख दिया, सीधे को उलटा, उलटे को सीधा। Fact (सच्ची बात) यही है, कि अनुभवी पुरूष का मिलना बड़े भागों से होता है। जो मिलेंगे उनका सबसे प्यार होगा। यह पहली निशानी है। तात पराई नहीं रहेगी। बस।

निस दिन लौ लागी रहे रमक रस राती। मतवारी मंजन मुकर मनोरथ माता ॥

कहते हैं उस नशे में सरशार रहता है इन्सान, मता रहता है। जो नशा चढ़ा हो तो और कोई रंग नहीं चढ़ना। एक ऐसा रंग चढ़ जाता है कि जिस पर और दुनियां का कोई रंग ही नहीं चढ़ता है। महापुरूषों को एक बरकत है। भाई नन्दलाल साहब ने कहा —

यक निगाहे जां फ़जायश बस बवद दरकारे मा।

कि एक जान के उभारने वाली नजर हमारे लिये काफी है। यही स्वामीजी ने फर्माया है कि जब उनकी मेहर आलूद (मेहर भरी) नजर पड़ेगी तुम्हारी रूह आसमानों पर पर्वाज़ (चढ़ाई) करने लग जायेगी। यही निशानी है। 'सौ सयाने एक ही मत।'

एक दृष्टि तारे गुरू सूरा।

गुरू बाणी कहती है। ऐसे मस्तों की नज़र पड़ जाये क्या कहना ! शम्स तबरेज़ साहब ने कहा —

साक़ी ज़े शराबे हक़ बरदार शराब रा।

ऐ साकी ! तू हक (प्रभु) की शराब हमारे लिये ला दे। क्या कर ?

जुर्राये मेहरबानी दिलहा कबाबे रा।

जिसको पीकर दिल कबाब हो जाता है। जले हुए दिल से आवाज भी जली हुई निकलेगी, दूसरों को जला देगी कि नहीं ? बात तो यह है। फिर हाफ़िज़ साहब कहते हैं —

ख़ुमें दो हजार बादा न रसद ब जुर्राये तो।

ख़ुम कहते हैं मटके को। तेरा एक घूंट दिया हुआ पानी, कहते हैं दो हज़ार खालिस शराब के मटकों का भी वह नशा नहीं।

ज़े कुजा शराबे खाकी ज़ें कुजा शराबे जानां।

कहां रूह की शराब, और कहां दुनियां की शराब ! क्या मुकबिला है ! अरे भई इसीलिये हम महापुरूषों के पास जाते हैं। सच्ची बात यह है।

महापवित्र साध का संग। जिस भेटत लागे हरि रंग ॥

साधु की संगत महा पवित्रता के देने वाली है। जिन के भेंट करने से दिल को Receptive बनाने से, अर्थात् उसके दिल से दिल को राह बनाने से नये से नया रंग आ जाता है, नशा दे जाता है। Life (ज़िन्दगी) से Life (ज़िन्दगी) आयेगी, याद रखो।

ऐसे निज परधान सुरत बलिहारी। बिना सत्गुरू के धृग जीवन संसारी॥

कहते हैं हम उन पर कुर्बान हैं। जिनको सत्गुरू नहीं मिले उनका जीवन बर्बाद है। बड़ी मोटी बात, यह तुलसी साहब की बाणी है।

अली जो समरथ के साथ सरण में आई । सो सुरत परम बिलास करैं घट मांहि॥

कहते हैं। वह समरथ पुरूष हैं जो उनकी शरण में आ गये, वह अन्तर में आ बैठता है। प्रगट हो जाता है। परम बिलास को इन्सान पा जाता है। देखिये, जो महात्मा पूर्ण है। वह God-man है, God जमा Man. अगर तुम Guru Man बन जाओ, गुरू God Man है, और तुम Guru Man बन गये, तो God (प्रभु) तुममें आ गया कि नहीं ? सहज ही पा गये।

हरि सच्चा गुरू भक्ति पाइये, सहजे मन वसावणियां।

आज अगर गुरू, साधु, सन्तों का नाम बदनाम है उसका कारण बड़ा साफ है। जिनमें यह समरथा नहीं वह Propaganda से, Paid प्रचार से, हला-हल्ला करने से, बहुत सारी बातें बनाने से, Acting Posing करने से बदनाम कर रहे हैं। जो इन्द्रियों के घाट पर हैं, वह गिरेंगे। न खुद मिली है चीज़, न दूसरों को दे सकते हैं।

जिसदा साहेब भुखा नंगा होवे। तिसदा नफ़र कित्थों रज खाये॥

बड़ी मोटी बात। कहते हैं अगर तुम किसी महात्मा के पास गये, आपको यह दौलत नहीं मिली, फिर भी तुम अन्धा-धुन्ध उसके पीछे लगे हो तो तुम भी अन्धे हो।

अन्धे के राह दसिये अन्धा होय सो जाय। होय सुजाखा नानका ताँ क्यों उजड़ पाय।
काचे गुरू को छांटते करत न लागे बार।

अरे भई, मनुष्य जीवन भागों से मिला है। क्यों गंवाते हो ? लेनी है चीज़ बड़ी खुशी की बात है, जाओ लो औरों को भी कहो, मिल सकती है। नहीं मिली है, फिर अन्धा-धुन्ध लगे पड़े हो, जीवन बर्बाद अपना भी करते हो, कईयों औरों के लिये बुरी मिसाल बन रहे हो।

पिव प्यारी महल मिलाप रहे दिन राती।

कहते हैं, वह प्यारा, जो प्रीतम है, दिन रात साथ है। वह और वह एक हो जाता है। जब तुम गुरू में महव (लीन) गये, गुरू प्रभु में महव है, तो तुम उसमें (प्रभु में) महव हो गये कि नहीं ? बात तो यह है।

तुलसी घट भीतर केल करे पिया साथी।

दिन रात, वह उससे जुदा नहीं, दिन रात का मेल बना हुआ है। यह गति बन जाती है। किनकी ? जिनको सत्स्वरूप हस्ती मिल गई है। अगर मनुष्य जीवन पाकर वह (गुरू) नहीं

मिला तो जीवन बर्बाद चला गया।

एक जगह शम्स तबरेज़ साहब ने जिकर किया है।

ज़े खाके मन अगर गन्दम बरायद।

अगर मेरे इस जिस्म की खाद बनाकर ज़मीन में डाल दी जाये, उससे जो गेहूं उगे क्या हो ?

अज़ो गर ना पज़ी मस्ती फजायश।

अगर उससे तू रोटी बनाकर पकाये तो मस्ती बढ़ेगी, पकाने वाला मस्त हो जायेगा। फिर क्या कहते हैं —

शवद दीवाना साजिन्दा पजिन्दा।

जो उसके परोसने वाला है, बनाने वाला, वह मस्त हो जायेगा। फिर !

तन्दूरे बहते मस्ताना सराय।

कि जिस तन्दूर में वह रोटी पके वह भी मस्ती के गाने गायेगा। आखर कुछ है भई ! Spirituality cannot be taugh, it cannot be bought but caught. रूहानियत न खरीदी जा सकती है, न पढ़ाई जा सकती है, छोह (छूत) की तरह पकड़ी जा सकती है। Life से Life आती है। महापुरूष जब भी एक दूसरे को देते रहे, यह आंखों के रस्ते दौलत देते रहे। किताबों ग्रन्थों में लिखत पढ़त के मुताबिक नहीं। वह जायदादें लिखी जाती हैं। नशा जो है वह नशे से आयेगा, आंखों से आयेगा। इसी का देना गुरमत का देना है, गुरूपद का देना है।

तो यह तुलसी साहब की वाणी थी। आखर फिर वहीं आ जाते हैं।

सुख सम्पत्ति कहूं चरण पर वारी। बिना सत्गुरू के धृग जीवन संसारी।

कहते हैं, दुनियां के सुख और सम्पत्ति किस काम की। जिसको सत्गुरू नहीं मिला उसको कुछ नहीं मिला। जीवन बर्बाद चला गया। बड़ी मोटी बात। आप सब कुछ बने, आलिम बने, फाज़िल बने, ग्रन्थाकार बने, बड़े धनाडय बने, बड़े हाकम बने, सब दुनियां तुम्हारे इशारे पर चली, हुआ क्या ? अगर सत्गुरू नहीं मिला जीवन बर्बाद चला गया। बड़ी साफ़गोई है। यह तुलसी साहब का शब्द था। कितना खोल खोलकर पेश किया है ! यहां यह होता है, कभी किसी महापुरूष की बाणीं, कभी किसी की ली जाती है। सौ सयाने एक ही मत। एक ही रोना सब रोते हैं। वह किसका रोना है ? यह हजारों इन्सान का, हमारा रोना है। ❑

✦ ✧ ✦